गैरसैंण,मंगलवार
14 मई 2024
वर्षः 16
अंकः 23 पृष्ठः 8
मूल्यः 2.00
RNI No.UTTHIN/2005/16338

जयन्त

निर्भीक – निष्पक्ष – जनसरोकार

www.dainikjayantnews.com
स्थापित 1979
संस्थापकः स्व. नरेन्द्र उनियाल
डाक पंजीयन पी.ए.ओ.07-2024-26 फोनः 9412081969 email: nagendra.uniyal@gmail.com

एक नजर

चारधाम यात्रा : 25 लाख से ज्यादा तीर्थयात्रियों ने कराया रजिस्ट्रेशन

जयन्त प्रतिनिधि।

देहरादून : उत्तराखण्ड में चारधाम यात्रा को लेकर देश-विदेश से श्रद्धालु चारों धाम में दर्शन के लिए पहुंच रहे हैं। प्रदेश में अब तक करीब 25 लाख से ज्यादा तीर्थयात्रियों ने रजिस्ट्रेशन करा चुके हैं। पर्यटन सचिव सचिन कुर्वे ने जानकारी देते हुए बताया कि रविवार शाम 7 बजे तक 25 लाख से अधिक तीर्थयात्रियों ने चारधाम यात्रा के लिए रजिस्ट्रेशन करा लिया है। चारधाम रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया 15 अप्रैल से शुरू की गई थी। प्रदेश सरकार और पर्यटन विभाग तीर्थयात्रियों को हर संभव सुविधा मुहैया कराने के लिए मुस्तैदी से काम कर रहे हैं। शासन की ओर से जारी दिशा-निर्देश को सभी अधिकारी गंभीरता से पालन कर रहे हैं। पर्यटन सचिव सचिन कुर्वे ने बताया कि फर्जी वेबसाइट के जरिए ठग लोगों से ठगी भी कर रहे हैं। इन सभी फर्जी वेबसाइट पर एसटीएफ और साइबर सेल की नजर है, इन्हें बंद कराया जा रहा है। हेली सेवा की बुकिंग के नाम पर फर्जी वेबसाइट के जरिए लोगों से ठगी के मामले अक्सर सामने आते हैं। इसको रोकने के लिए पिछले साल से आईआरसीटीसी के जरिए ही हेली सेवाओं की बुकिंग की जा रही है। इस साल 10 मई से चारधाम यात्रा की शुरुआत हुई है। हालांकि, इसके लिए रजिस्ट्रेशन काफी पहले ही शुरू हो चुका था।

अन्नपूर्णा मेले में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

नई टिहरी : वैशाख माह में होने वाले थौल मेलों का सोमवार को तुंणगी के ऐतिहासिक अन्नपूर्णा मेले के साथ यहां समापन हो गया। आखिरी थौल होने से नगर से लेकर गांवों तक की भारी भीड़ यहां उमड़ी। करीब 49 वर्ष पूर्व पशुबलि जैसी बर्बर कुप्रथा के खिलाफ अन्नपूर्णा मेले की शुरुआत हुई थी। प्रसिद्ध विद्वान स्व. आचार्य चक्रधर जोशी व समाजसेवी भारती सिंह ने तमाम विरोधों के बाबजूद इस ऐतिहासिक मेले को शुरू किया था। अन्नपूर्णा मेले के प्रभाव से क्षेत्र के अन्य थौल मेलों में भी पशुबलि जैसी प्रथा धीरे-धीरे बन्द हो गयी। तीर्थनगरी के निकट आयोजित इस मेले में नगर वासियों व ग्रामीणों ने क्षेत्र की सुख समृद्धि के लिए मां अन्नपूर्णा की पूजा-अर्चना की। जबकि ढोल नगाडों के साथ मन्दिर में देवी का ध्वज फहराया गया। मेले में सहारनपुर, हल्द्वानी, रुड़की, काशीपुर, हरिद्वार आदि से बड़ी संख्या में दुकानदार पहुंचे थे। सुहागन महिलाओं में चूड़ी, बिंदी लेने, बच्चों में चरखी, जंपिंग खेलने व युवाओं में टैटू बनवाने की होड़ मची रही। वहीं मेले में आये लोगों ने जलेबी, पकोड़ी, आईसक्रीम का भी खूब आनंद उठाया। धूलभरी आंधी व बारिश से मेले में अफरा तफरी भी बनी। (एजेंसी)

मेरे बेटे का सवाल है, नहीं कर सकता सुनवाई, एससी जज ने छोड़ा आप के पूर्व मंत्री से जुड़ा केस?

नई दिल्ली । सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ न्यायाधीश और देश के होने वाले अगले मुख्य न्यायाधीश जस्टिस संजीव खन्ना ने आप नेता और दिल्ली के पूर्व मंत्री सत्येंद्र जैन की अपील याचिका पर सुनवाई करने से यह कहते हुए इनकार कर दिया कि इससे मेरे बेटे का नाता जुड़ा है। दरअसल, सत्येंद्र जैन ने विवेकानंद इन्स्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज के गवर्निंग काउंसिल के चेयरमैन डॉ। एससी वत्स के खिलाफ मुकदमा दायर किया है, जिसकी सुनवाई आज जस्टिस खन्ना की बेंच में होनी थी।

आज (सोमवार, 13 मई) जैसे ही मामला जस्टिस खन्ना के पास पहुंचा उन्होंने यह कहते हुए उस केस से खुद को अलग कर लिया कि वहां (विवेकानंद इन्स्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज) उनका बेटा पढ़ता था। जस्टिस खन्ना ने कहा, "इस याचिका पर मैं सुनवाई नहीं कर सकता, इसे दूसरी पीठ में भेजना होगा। । । मेरा बेटा उस कॉलेज में पढ़ता था।" इसके बाद उस मामले को ग्रीष्मावकाश के बाद 8 जुलाई से शुरू होने वाले सप्ताह में सूचीबद्ध किया गया है।

सत्येंद्र जैन और एससी वत्स के बीच सियासी लड़ाई 2020 से जारी है। सत्येंद्र जैन 2020 के दिल्ली विधानसभा चुनाव में शकूरबस्ती से निर्वाचित हुए थे। उन्होंने एससी वत्स को हराया था, जो भाजपा के उम्मीदवार थे।

पाक को चूड़ियां पहना देंगे, कांग्रेस की परमाणु बम वाली सलाह पर बोले पीएम नरेंद्र मोदी

मुजफ्फरपुर । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिहार के मुजफ्फरपुर में आयोजित चुनावी सभा के दौरान विपक्ष पर जोरदार हमला बोला है। अपने संबोधन के दौरान पीएम मोदी ने कहा कि ये लोग इतने डरे हुए हुए हैं कि इन्हें रात को सपने में भी पाकिस्तान का परमाणु बम दिखाई देता है। इंडिया गठबंधन के नेताओं के कैसे बयान सामने आ रहे हैं। कहते हैं कि पाकिस्तान ने चूड़ियां नहीं पहनी हैं। अरे भाई, पहना देंगे। पीएम मोदी ने कटाक्ष करते हुए आगे कहा कि उनको आटा भी चाहिए, बिजली भी नहीं है। अब हमको मालूम नहीं था कि उनके पास चूड़ियां भी नहीं हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आगे कहा कि ये देश का चुनाव है, हिंदुस्तान का भविष्य तय करने वाला चुनाव है। देश कांग्रेस वाली कमजोर, डरपोक और अस्थिर सरकार बिल्कुल नहीं चाहता है। दरअसल, कुछ दिन पहले कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मणिशंकर अय्यर ने कहा था कि भारत को पाकिस्तान की इज्जत करनी चाहिए, क्योंकि पड़ोसी मुल्क के पास परमाणु बम है। अगर हम उन्हें इज्जत नहीं देंगे तो वे भारत पर परमाणु हमला करने की सोच सकते हैं। पीएम मोदी ने आरोप लगाते हुए कहा कि इंडिया गठबंधन के नेताओं ने देश के खिलाफ ही किसी से सुपारी ले रखी है। उन्होंने कहा कि इंडिया गठबंधन वाले देश का परमाणु हथियार खत्म करना चाहते हैं। पीएम मोदी ने दावा करते हुए कहा कि चौथे चरण में भाजपा–एनडीए की आंधी चल रही, जंगलराज वाले चारों खाने चित होने जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि मुजफ्फरपुर नक्सलवाद का दंश झेलता था, पहले की सरकारें इन्हें पालती थीं और आपके खिलाफ इस्तेमाल करती थीं। अब नक्सल प्रभावित जिले घटे हैं, इससे उद्योग स्थापित हो रहे, निवेश आ रहा है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि किसान एनडीए सरकार की प्राथमिकता है। हमारी सरकार ने बिहार में किसानों को 22 हजार करोड़ दिए। गांवों में आए इस पैसे से बिहार की अर्थव्यवस्था दौड़ने लगी है। उन्होंने कहा कि मछली पालन से जुड़े लोग हमारी प्राथमिकता हैं। पहली बार मछुआरों के लिए विशेष मंत्रालय बनाया। मत्स्य संपदा योजना से हजारों करोड़ की मदद दी।

चुनाव आयोग के काम में नहीं देंगे दखल, पीएम मोदी पर एक्शन की मांग वाली याचिका पर बोला हाई कोर्ट

नई दिल्ली । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ कार्रवाई की मांग वाली याचिका खारिज करते हुए दिल्ली हाई कोर्ट ने सोमवार को कहा कि वह चुनाव आयोग का सूक्ष्म प्रबंधन नहीं कर सकता है। बता दें कि याचिका में आरोप लगाया गया था कि प्रधानमंत्री ने सांप्रदायिक भाषण दिए हैं ऐसे में उनपर कार्रवाई होनी चाहिए। कोर्ट ने कहा कि चुनावी आचार संहिता से निपटने का काम चुनाव आयोग का है और कोर्ट को इसमें दखल देने की जरूरत नहीं है। जस्टिस सचिन दत्ता ने कहा, हम चुनाव आयोग को माइक्रोमैनेज नहीं कर सकते । चुनाव प्रचार में जो भी बयान दिए जाते हैं या फिर उनपर क्या कार्रवाई करनी है इससे संबंधित फैसले चुनाव आयोग को करने हैं। हम नहीं कह सकते कि उन्हें क्या करना है। इसके बाद उन्होंने इस याचिका को खारिज कर दिया। याचिका में कहा गया था कि बांसवाड़ा में प्रधानमंत्री मोदी की स्पीच मामले में एफआईआर दर्ज की जाए। बता दें कि उन्होंने 2 अप्रैल को राजस्थान के बांसवाड़ा में एक रैली को संबोधित किया था। इस भाषण में उन्होंने कहा था कि कांग्रेस आप लोगों की संपत्ति लेकर उन लोगों में बांट देना चाहती है जिनके ज्यादा बच्चे हैं। उन्होंने ज्यादा बच्चे वालों को घुसपैठिया कहकर संबोधित किया था। वहीं याचिका में मध्य प्रदेश के सागर में प्रधानमंत्री मोदी के भाषण का भी जिक्रकिया गया था।

परिणाम आते ही टॉपरों के खिले चेहरे

12वीं में एनटीआइएस के अखिल ने किया टॉप, दूसरे नंबर पर आयुषी

नई टिहरी। सीबीएसई बोर्ड ने 10 वीं व 12 का परीक्षा परिणाम घोषित कर दिया है। परिणाम आते है उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों के चेहरों पर खुशी साफ झलक रही थी। 12 वीं में न्यू टिहरी इंटरनेशनल स्कूल के छात्र अखिल डंग ने ओवर ऑल टाप किया है जबकि इसी विद्यालय की आयुषी भट्ट दूसरे स्थान पर रही। सोमवार को परीक्षा परिणाम घोषित होने के साथ ही छात्र मिठाई लेकर स्कूल पहुंचे और गुरुजनों का आशीर्वाद लेकर शिक्षकों व साथियों को मिठाई खिलाई। जिन छात्रों को टॉप आने की उम्मीद थे वे उत्साहित नजर आ रहे थे और जैसे ही परिणाम आया टॉपर छात्र खुशी से उछल पड़े। स्थान पाने वाले छात्रों के माता–पिता के चेहरों पर भी बच्चों की सफलता की खुशी साफ झलक रही थी।

अखिल डंग ने 98 प्रतिशत अंक हासिल कर जिले में किया टॉप

एनटीआइएस स्कूल नई टिहरी के 12 वीं के विज्ञान वर्ग के छात्र अखिल डंग ने 98 प्रतिशत अंक हासिल कर जिले में टॉप किया है जबकि इसी विद्यालय की आयुषी भट्ट 95.6 प्रतिशत अंक लेकर दूसरे स्थान पर रही है व आन्य 95 प्रतिशत अंक लेकर तीसरे स्थान पर रही।

इसी स्कूल के 10 वीं में इरफान बेग ने 96 प्रतिशत अंक के साथ स्कूल टॉप किया जबकि सक्षम पंवार 95.2 के साथ दूसरे व स्नेहा सजवाण 94 प्रतिशत के साथ तीसरे स्थान पर रही। वहीं नई टिहरी सेंट एंथनी पब्लिक स्कूल के 12 वीं में आदित्य रावत ने 92 अंकों के साथ अपने स्कूल में टॉप किया है जबकि दिव्यांक रावत 91 के साथ स्कूल में दूसरे स्थान व प्रिंस धनाई 88 प्रतिशत अंक के साथ तीसरे स्थान पर है।

पोलिंग बूथ पर एमएलए ने जड़ा वोटर को थप्पड़

मतदाता ने पलटकर कर दी विधायक की पिटाई

गुंटूर (आंध्र प्रदेश)। लोकसभा चुनाव के चौथे चरण में उत्तर प्रदेश, बिहार, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना समेत देश के 10 राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों की 96 लोकसभा सीटों पर मतदान हो रहा है। इसके अलावा आंध्र प्रदेश की 175 विधानसभा सीटों के लिए भी वोट डाले जा रहे हैं। इस बीच, आंध्र प्रदेश की सत्ताधारी वाईएसआरसीपी के एक विधायक को मतदान केंद्र पर ही आपा खोते हुए देखा गया। मुख्यमंत्री जगनमोहन रेड्डी की पार्टी वाईएसआरसीपी के विधायक वीएस शिवकुमार ने एक बूथ पर एक मतदाता को थप्पड़ जड़ दिया। इसके बाद पीड़ित शख्स ने भी विधायक पर पलटवार करते हुए थप्पड़ जड़ दिया। यह मामला गुंटूर के एक मतदान केंद्र का है। इसका वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। वीडियो में शिवकुमार और मतदाता दोनों को एक–दूसरे को मारते हुए देखा जा सकता है। जिस वक्त विधायक ने मतदाता को थप्पड़ मारा, उस वक्त मतदाता एक कतार में खड़ा था। वीडियो में साफ तौर पर दिख रहा है कि विधायक मतदाता की तरफ बढ़ रहा है।

रुद्रनाथ के कपाट 18 मई को खुलेंगे

चमोली : 11 हजार फिट की ऊंचाई पर स्थित भगवान रुद्रनाथ के कपाट 18 मई को ब्रह्म मुहुर्त पर विधि विधान के साथ खोले जाएंगे। रुद्रनाथ हिमालय के कपाट खुलने से पूर्व की प्रक्रिया मंगलवार से रुद्रनाथ की गद्दी स्थल गोपेश्वर गोपीनाथ मंदिर परिसर में 14 मई को प्रातः काल से आरम्भ हो जायेगी। सोमवार को यह जानकारी देते हुए गोपीनाथ मंदिर के प्रबंधक अनसूया प्रसाद भट्ट ने बताया 18 मई को भगवान रुद्रनाथ को कपाट विधि विधान के साथ खुलेंगे। बताया भगवान रुद्रनाथ के कपाट खुलने से पूर्व 14 मई से 16 मई सुबह तक भगवान रुद्रनाथ के उत्सव विग्रह स्वरूप के दर्शन गोपीनाथ मंदिर गोपेश्वर परिसर में कर पाएंगे। 16 मई को पूजा के बाद भगवान रुद्रनाथ की चल विग्रह डोली रुद्रनाथ मंदिर हेतु प्रस्थान करेगी। 18 मई को प्रातः काल में पूर्ण विधि विधान के साथ मंदिर के कपाट भगवान के लिए श्रद्धालुओं के खोल दिए जायेंगे। इस बार पंडित वेद प्रकाश भट्ट रुद्रनाथ मंदिर के पुजारी होंगे। (एजेंसी)

ध्रुव राठी वीडियो मामले में अरविंद केजरीवाल को राहत

सुप्रीम कोर्ट ने सीएम को दिया ये आदेश

नई दिल्ली। ध्रूव राठी का एक वीडियो रीट्वीट करने के मानहानि मामले में सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को शिकायतकर्ता के साथ विवाद सुलझाने के लिए समय दिया है। सोमवार को इस मामले में हुई सुनवाई को लेकर न्यायमूर्ति संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता की पीठ ने कहा कि पहले से दी गई अंतरिम रोक अगले आदेश तक जारी रहेगी।

11 मार्च के बाद शिकायतकर्ता से कोई संपर्क नहीं

केजरीवाल की ओर से पेश वरिष्ठ वकील अभिषेक सिंघवी ने कहा कि 11 मार्च को आखिरी सुनवाई के बाद दोनों पक्ष समझौते पर चर्चा के लिए एक–दूसरे से संपर्क नहीं कर सके। दरअसल, केजरीवाल ने मई 2018 में आपराधिक मानहानि मामले में उन्हें जारी किए गए समन को बरकरार रखने के दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश को चुनौती दी है।

शिकायतकर्ता के वकील ने दी ये दलीलें

शिकायतकर्ता के वकील विकास सांकृत्यायन ने कहा कि पिछली सुनवाई के बाद किसी ने उनसे संपर्क नहीं किया। पीठ ने वकील से कहा कि अब केजरीवाल का पक्ष शिकायतकर्ता से संपर्क करेगा और मामले की अगली सुनवाई 12 अगस्त से शुरू होने वाले सप्ताह में तय कर दी गई है। 11 मार्च को शीर्ष अदालत ने केजरीवाल से पूछा था कि क्या वह शिकायतकर्ता से माफी मांगना चाहते हैं?

ऐसे माफी मांगे केजरीवाल

दरअसल, केजरीवाल ने 26 फरवरी को शीर्ष अदालत से कहा था कि उन्होंने भाजपा आईटी सेल से संबंधित यूट्यूबर राठी द्वारा प्रसारित कथित अपमानजनक वीडियो को रीट्वीट करके गलती की थी। सांकृत्यायन की ओर से पेश वकील ने शीर्ष अदालत से कहा कि केजरीवाल अपने कृत्य के लिए " या इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर माफी मांग सकते हैं।

संपादकीय

वीआईपी दर्शन समाप्त

धार्मिक स्थलों पर अपने आराध्य के दर्शन करने को लेकर हिंदू धर्म में एक गलत परंपरा चलती आ रही है जो आम श्रद्धालुओं के लिए हमेशा से ही परेशानी का कारण बनी है। हमारे देश के विभिन्न मंदिरों में जहां एक तरफ आम व्यक्ति लंबी-लंबी कतारों में धक्के खाकर अपने इष्ट देवों के दर्शन करता है वहीं अति विशिष्ट व्यक्तियों के लिए मंदिर प्रबंधन द्वारा ऐसे प्रबंध किए जाते है जिसके कारण अक्सर हिंदू धर्म की व्यवस्थाओं पर भी सवाल खड़े होते हैं। उत्तराखंड के चार धाम भी इस गलत परंपरा से बचे हुए नही है लेकिन अब बद्रीनाथ में स्थानीय लोगों ने इस परंपरा को बदलने का बीड़ा उठाया और इसका परिणाम भी तुरंत देखने को मिला। बद्रीनाथ धाम खोलने के साथ ही श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ने लगी है तो वही अपने पद और सामाजिक रुतबे का प्रभाव दिखाकर बिना कतारों में लगे वीआईपी दर्शन करने वाले भी सक्रिय हो गए हैं। आम श्रद्धालुओं के साथ ही स्थानीय लोगों को भी वीआईपी दर्शनों का यह चलन अब खटकने लगा है, लिहाजा बदरीनाथ धाम में भारी विरोध प्रदर्शन के बाद बीकेटीसी की ओर से शुरू की गई वीआईपी दर्शन व्यवस्था को समाप्त करना पड़ा है। हालांकि इसमें कुछ प्रावधान भी छोड़े गए है जिसके तहत वीआईपी दर्शनों का लाभ ऐसे लोगों को ही मिलेगा जो सरकार की ओर से जारी किए गए प्रोटोकॉल के अधीन आएंगे। मंदिर प्रबंधन समिति में स्थानीय लोगों के लिए मंदिर में आने-जाने की छूट को जारी रखा है। असल में उत्तराखंड की चारों धामों में ही वीआईपी दर्शनों के कारण काफी अफरातफरी की स्थिति होती थी, साथ ही सामान्य श्रद्धालु भी इस व्यवस्था को लेकर काफी नाराज नजर आते थे। लंबी कतारों के कारण प्रतीक्षा भी लंबी हो जाती थी। ऐसे हालातों के बाद लगातार वीआईपी दर्शनों को लेकर विरोध और असंतोष नजर आने लगा था। बद्रीनाथ धाम का पंडा समाज, तीर्थ पुरोहितों के साथ-साथ स्थानीय व्यापारी वीआईपी की अब दर्शन समाप्त करने के लिए प्रदर्शन कर रहे थे, जिसमें स्थानीय महिलाओं के विरोध के बाद तो मंदिर समिति को वीआईपी दर्शनों की व्यवस्था को समाप्त करने के ऐलान करना पड़ा। वीआईपी दर्शनों की व्यवस्था बद्रीनाथ केदारनाथ मंदिर समिति द्वारा शुरू की गई थी जिसके कारण कतारों में लगे श्रद्धालुओं को काफी परेशानियां होती थी, हालांकि इसके बदले मंदिर समिति को अच्छी खासी कमाई हो जाती थी लेकिन पनप रहे विरोध के बाद इस बात के संकेत मिलने लगे थे की वीआईपी दर्शनों का दौर जल्द समाप्त होने वाला है। वैसे भी देखा जाए तो हिंदू धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्म के धार्मिक स्थलों पर वीआईपी दर्शनों का प्रावधान ही नही है और सभी लोग एक समान दर्शन या फिर आराधना के लिए उपस्थित होते हैं। कहीं ना कहीं मंदिरों में वीआईपी दर्शनों की व्यवस्था के कारण आलोचक भी मुखर होते आए हैं जो ऐसी धार्मिक व्यवस्थाओं पर समानता को लेकर सवालिया निशान भी खड़े करते हैं।

सरकार सजग और जनता जागरूक बने

सुषमा गौर

बीते बुधवार को ताइवान ने पिछले पच्चीस साल में आए सबसे तेज भूकंप का सामना किया। निश्चित रूप से भूकंप से हमारे संरचनात्मक विकास सड़क, पुल व सार्वजनिक निर्माण को क्षति पहुंचती है। लेकिन ताइवान ने पिछले भूकंपों से हुई मानवीय त्रासदी से सबक लेकर जिस तरह जनधन की हानि को कम किया है, वह काबिले तारीफ है। इस भूकंप में गिनती के लोगों की जान गंवानी पड़ी। बड़ी बिल्डिंगें हिली मगर क्षति मामूली हुई।

दरअसल, ताइवान ने आधुनिक तकनीक व कुशल अग्रिम सूचना की व्यवस्था से आपदा से होने वाली क्षति को टाला है। भूकंप के केंद्र उत्तरी तट पर स्थित ख्वालिएन में 7.4 तीव्रता के भूकंप से क्षति स्वाभाविक थी, लेकिन सुनियोजित राहत व बचाव से जनक्षति को कम किया जा सका। सुरंगों व इमारतों में फंसे लोगों को बचाने का काम तत्परता से किया जा रहा है। जहां तक इस पहाड़ी इलाके में भूस्खलन का सवाल है तो मानव उसे टाल नहीं सकता। भूकंप से बचाव के ताइवानी सिस्टम बेहतर ढंग से काम कर रहे हैं। वहीं दूसरी ओर जापान आदि पड़ोसी देशों ने भूकंप के बाद सुनामी की अग्रिम सुरक्षा चेतावनी जारी कर दी। दरअसल भूकंप से होने वाली क्षति इस बात पर निर्भर करती है वह किस समय आया। बुधवार को आया भूकंप सुबह आया, यदि यह देर रात या तड़के आता तो क्षति ज्यादा हो सकती थी। यद्यपि ताइवान में भी सड़क व रेल परिवहन प्रभावित जरूर हुआ है। दरअसल, सितंबर 1999 में ताइवान में आए 7.6 तीव्रता के भूकंप में करीब ढाई हजार लोगों की मौत हुई थी और करीब पांच हजार इमारतें क्षतिग्रस्त हुई थीं। जिसके बाद वहां भवन व सार्वजनिक निर्माण में सुरक्षा मानकों को गंभीरता से लिया गया। इन मानकों का पालन अनिवार्य रूप से किया गया और सख्ती से उसकी निगरानी की गई। सरकारों की सजगता व नागरिकों की जागरूकता ने इस संकट का मुकाबला करना सीख लिया। वहीं हमारे सामने जापान दुनिया का अकेला ऐसा देश है जो इतने बड़े भूकंपों के बाद नुकसान कम करने में सफल रहा।

> **भूकंप से होने वाली क्षति इस बात पर निर्भर करती है वह किस समय आया। बुधवार को आया भूकंप सुबह आया, यदि यह देर रात या तड़के आता तो क्षति ज्यादा हो सकती थी। यद्यपि ताइवान में भी सड़क व रेल परिवहन प्रभावित जरूर हुआ है। दरअसल, सितंबर 1999 में ताइवान में आए 7.6 तीव्रता के भूकंप में करीब ढाई हजार लोगों की मौत हुई थी और करीब पांच हजार इमारतें क्षतिग्रस्त हुई थी। जिसके बाद वहां भवन व सार्वजनिक निर्माण में सुरक्षा मानकों को गंभीरता से लिया गया। इन मानकों का पालन अनिवार्य रूप से किया गया और सख्ती से उसकी निगरानी की गई। सरकारों की सजगता व नागरिकों की जागरूकता ने इस संकट का मुकाबला करना सीख लिया। वहीं हमारे सामने जापान दुनिया का अकेला ऐसा देश है जो इतने बड़े भूकंपों के बाद नुकसान कम करने में सफल रहा। दरअसल, मनुष्य को भूकंप से ज्यादा हमारे निर्माण कार्य की गुणवत्ता की कमी और नियमों की अनदेखी मारती है। भारत में भूकंप से बचाव के लिये पर्याप्त अनुसंधान हुए और सुरक्षित घरों के लिये कोड बने हैं।**

दरअसल, मनुष्य को भूकंप से ज्यादा हमारे निर्माण कार्य की गुणवत्ता की कमी और नियमों की अनदेखी मारती है। भारत में भूकंप से बचाव के लिये पर्याप्त अनुसंधान हुए और सुरक्षित घरों के लिये कोड बने हैं। लेकिन संकट उनके ईमानदारी से क्रियान्वयन तथा आर्थिक संसाधनों के अभाव का है। घर खरीदने वाले लोगों को उलटे उस्तरे से मुंडने वाले बिल्डर इन मानकों का इस्तेमाल करने से गुरेज करते हैं क्योंकि इसे लागू करने से उनका मुनाफा कम हो जाता है। गरीब व्यक्ति जैसे-तैसे मकान तो बना लेता है लेकिन भूकंप के मानकों का इस्तेमाल नहीं कर पाता। सरकारी गंभीरता भी नजर नहीं आती। सरकारों की प्राथमिकता आपदा के बाद राहत सामग्री व मुआवजा बांटने में होती है। समय रहते भवन निर्माण में भूकंप से बचाव के कोड लागू करवाने में संबंधित विभाग लगातार आपराधिक लापरवाही दर्शाते रहते हैं। हमें जापान से सबक लेना चाहिए जिसने भूकंप के साथ जीना सीख लिया है। वर्ष 2011 में भयावह नौ तीव्रता के भूकंप से जो तबाही हुई और उसके बाद सुनामी ने कहर बरपाया, उसके बाद जापान सरकार ने जनक्षति टालने के लिये गंभीर पहल की। इशिकावा की तबाही व फुकुशिमा की पॉवर प्लांट दुर्घटना के सबकों को जापान ने गंभीरता से लिया। आज भूकंप के अलार्म की चेतावनियां जापानियों के लिये आम बात है।

हम मान लें कि बड़ा भूकंप कभी भी आ सकता है तो क्या हमारी इमारतें इसके लिये सुरक्षित हैं? जापान ने 2011 की त्रासदी के बाद भूकंपरोधी निर्माण में कोई चूक नहीं की। वैसे तो वहां 1981 के बाद भवन निर्माण में सुरक्षा मानकों को अनिवार्य कर दिया गया था, लेकिन बाद के अनुभवों के साथ इन मानकों में लगातार सुधार भी किया गया। यही वजह थी कि इशिकावा के तेज भूकंप के बाद अधिकांश इमारतें सुरक्षित रहीं। जापान ने याद रखा कि कांतो भूकंप के बाद इस शहर का बड़ा हिस्सा समतल हो गया था। जिसके बाद पहले भूकंप प्रतिरोधी बिल्डिंग कोड बनाया गया। फिर भवन निर्माण में स्टील व कंक्रीट का प्रयोग अनिवार्य हो गया। हर नये भूकंप के बाद नियम बदले जाते हैं।

घातक प्रभावों से सुरक्षा मानवीय अधिकार

सुभाष कुमार

यह जानते हुए भी कि प्रकृति के साथ इंसानी क्रूरता से उपजे ग्लोबल वार्मिंग संकट ने हमारे दरवाजे पर दस्तक दे दी है, हमारी सरकारें इस गंभीर चुनौती के मुकाबले को लेकर उदासीन नजर आती हैं। आज दुनिया में हर साल करोड़ों लोगों को अतिवृष्टि, अनावृष्टि, सूखे, बाढ़ व चक्रवातों की वजह से विस्थापन का दंश झेलना पड़ रहा है। वैश्विक स्तर पर खेतों में खाद्यान्न उत्पादकता में कमी आई है। साथ ही लाखों लोगों को अपने जीवन से हर साल हाथ धोना पड़ता है। लेकिन विकसित देशों द्वारा जलवायु परिवर्तन पर बड़े सम्मेलनों के आयोजन के अलावा इस संकट से निपटने के लिये युद्धस्तर पर कोई कोशिश होती नजर नहीं आती। सिर्फ जुबानी जमाखर्च के अलावा कोई ठोस पहल विकसित व विकासशील देशों के स्तर पर अब तक नहीं हुई है। यही वजह है कि जलवायु परिवर्तन के घातक प्रभाव के प्रति सरकारी निष्क्रियता को चुनौती देने वाली स्विस वृद्ध महिलाओं द्वारा दायर याचिका पर यूरोपीय मानवाधिकार न्यायालय का फैसला सरकारों की जवाबदेही तय करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह ऐतिहासिक आदेश इस बात पर बल देता है कि जलवायु परिवर्तन प्रभावों से सुरक्षा मांगना एक मौलिक मानव अधिकार है। निस्संदेह फैसला पूरे यूरोप के लिये एक नजीर होनी चाहिए। यह फैसला बताता है कि जलवायु संकट से निपटने की तत्काल जरूरत है। सरकारों को जलवायु अनुकूल नीतियों को लागू करने में दृढ़ इच्छाशक्ति दिखानी होगी। साथ ही सरकारों को जवाबदेह बनाने वाले सार्वजनिक दबाव व नागरिक सक्रियता को गंभीरता से लेने की जरूरत है। निस्संदेह नागरिकों की जागरूकता को कमतर नहीं आंका जा सकता। जाहिर बात है कि यदि लाखों लोगों के जीवन की गुणवत्ता व प्रत्याशा को जलवायु संकट बुरी तरह प्रभावित कर रहा हो तो सरकारें कैसे उदासीन बनी रह सकती हैं। तमाम अध्ययनों से पता चला है कि जलवायु परिवर्तन से जहां हमारी खाद्य श्रृंखला खतरे में है, वहीं तमाम तरह के नये-नये घातक रोग सामने आ रहे हैं। जिनसे निपटने के लिये तत्काल कदम उठाने की जरूरत है।

निश्चित रूप से यूरोपीय मानवाधिकार न्यायालय का फैसला पूरे विश्व के लिये मार्गदर्शक साबित हो सकता है। हाल ही में भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने एक फैसले में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से जीवन रक्षा को हमारे संविधान प्रदत्त मौलिक अधिकारों की श्रेणी में रखा था। कोर्ट ने माना था कि जलवायु परिवर्तन का असर सीधा जीवन के अधिकार पर पड़ता है। अदालत ने एक फैसले में कहा था कि जलवायु परिवर्तन के हानिकारक प्रभावों से बचने के लिये नागरिकों के अधिकारों की दृष्टि से स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग को प्राथमिकता देने पर बल दिया जाना चाहिए। निश्चित रूप से यूरोपीय मानवाधिकार न्यायालय का फैसला यूरोपीय व अमेरिकी देशों की जलवायु नीतियों को भी नया आकार प्रदान करने में सहायक होगा। यह फैसला जलवायु परिवर्तन और मानवाधिकारों के अंतर्संबंध को प्रदर्शित करते हुए बताता है कि पर्यावरणीय संकट के कारण हाशिये पर आने वाले समुदायों को तत्काल संरक्षण प्रदान करने की जरूरत है। पर्यावरण के स्तर पर उत्पन्न प्रतिकूल परिस्थितियां समाज में हाशिये पर रहने वाले समाजों को असंगत रूप से प्रभावित करती हैं।

गर्मी जल्दी आई साथ में प्यास भी गहराई

पंकज चतुर्वेदी

इस बार गर्मी जल्दी आई और साथ में प्यास भी गहराई। केंद्र सरकार की महत्त्वाकांक्षी ह्यहर घर जल योजनाह्ल ने बढ़ते ताप के सामने दम तोड़ दिया।

आखिर, धरती का सीना चीर कर गहराई से पानी उलीचने से हर एक का कंठ तर होने से तो रहा। वैसे हकीकत तो यह है कि अब देश के 32 फीसद हिस्से को पानी की किल्लत के लिए गरमी के मौसम का इंतजार भी नहीं करना पड़ता– बारहों महीने, तीसों दिन जेठ ही रहता है।

कुछ दशक पहले पलट कर देखें तो आज पानी के लिए हाय–हाय कर रहे इलाके अपने स्थानीय स्त्रोतों की मदद से ही खेत और गले, दोनों के लिए अफरात पानी जुटाते थे। एक दौर आया कि अंधाधुंध नलकूप रोपे जाने लगे, जब तक संभलते जब तक भूगर्भ का कोटा साफ हो चुका था।

समाज को एक बार फिर बीती बात बन चुके जल–स्त्रोतों की ओर जाने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है–तालाब, कुएं, बावड़ी। लेकिन एक बार फिर पीढियों का अंतर सामने खड़ा है, पारंपरिक तालाबों की देखभाल करने वाले लोग किसी ओर काम में लग गए और अब तालाब सहेजने की तकनीक नदारद हो गई है। तभी बीते तीन दशक में केंद्र और राज्य की अनेक योजनाओं के तहत तालाबों से गाद निकालने, उन्हें सहेजने के नाम पर अफरात पैसा खर्च किया गया और नतीजा रहा वही ह्यढाक के तीन पात!ह्ल

भारत के हर हिस्से में वैदिक काल से लेकर ब्रितानी हुकूमत के पहले तक सभी कालखंडों में समाज द्वारा अपनी देश–काल–परिस्थिति के मुताबिक बनाई गई जल संरचनाओं और जल पण्रालियों के कई प्रमाण मिलते हैं, जिनमें तालाब हर जगह हैं। रेगिस्तान में तो उन तालाबों को सागर की उपमा दे दी गई तो कन्नड में कैरे और तमिल में ऐरी। यहां तक कि ऋग्वेद में भी सिंचित खेती, कुओं और गहराई से पानी खींचने वाली प्रणालियों का उल्लेख मिलता है।

हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो (ईसा से 3000 से 1500 साल पूर्व) में जलापूर्ति और मल निकासी की बेहतरीन पण्रालियों के अवशेष मिले हैं। ईसा से 321–297 साल पहले, कौटिल्य का अर्थशास्त्र बानगी है जो बताता है कि तालाबों को राज्य की जमीन पर बनाया जाता था। समाज ही तालाब गढने का सामान जुटाता था। जो लोग इस काम में

असहयोग करते या तालाब की पाल को नुकसान पहुंचाते उन्हें राज्य–दंड मिलता। आधुनिक तंत्र की कोई भी जल संरचना 50–60 साल में दम तोड़ रही है जबकि चंदेलकाल अर्थात 1200 साल से अधिक पुराने तालाब आज भी लोगों को जिंदगी का भरोसा दिए हुए हैं।

अंग्रेज शासक चकित थे, यहां के तालाबों की उत्तम व्यवस्था देख कर। उन दिनों कुओं के अलावा तालाब ही पेयजल और सिंचाई के साधन हुआ करते थे। फिर आधुनिकता की आंधी में सरकार और समाज, दोनों ने तालाबों को लगभग बिसरा दिया, जब आंख खुली तब बहुत देर हो चुकी थी। एक सदी पहले तक बुंदेलखंड के इन तालाबों की देखभाल का काम पारंपरिक रूप से ढीमर समाज के लोग करते थे। वे तालाब को साफ रखते, उसकी नहर, बांध, जल आवक को सहेजते–ऐवज में तालाब की मछली, सिंघाड़े और समाज से मिलने वाली दक्षिणा पर उनका हक होता। इसी तरह प्रत्येक इलाके में तालाबों को सहेजने का जिम्मा समाज के एक वर्ग ने उठा रखा था और उसकी रोजी–रोटी की व्यवस्था वही समाज करता था, जो तालाब के जल का इस्तेमाल करता था।

लेकिन आज गांव या शहर के रुतबेदार लोग जमीन पर कब्जा करने के लिए बाकायदा तालाबों को सुखाते हैं, पहले इनके बांध फोड़े जाते हैं, फिर इनमें पानी की आवक के रास्तों को रोका जाता है–न भरेगा पानी, न रह जाएगा तालाब। गांवों में तालाब से खाली हुई उपजाऊजमीन लालच का कारण होती है तो शहरों में कालोनियां बनाने वाले भूमाफिया इसे सस्ता सौदा मानते हैं। राजस्थान में उदयपुर से ले कर जैसलमेर तक, हैदराबाद में हुसैनसागर, हरियाणा में दिल्ली से सटी सुल्तानपुर लेक या फिर उप्र के चरखारी और झांसी हों या फिर तमिलनाडु की पुलिकट झील; सभी जगह एक ही कहानी है। हां, पात्र अलग–अलग हो सकते हैं।

सभी जगह पारंपरिक जल–प्रबंधन के नष्ट होने का खमियाजा भुगतने और अपने किए या फिर अपनी निष्क्रियता पर पछतावा करने वाले लोग एक समान ही हैं। समाज और सरकार पारंपरिक जल–स्त्रोतों कुओं, बावडियों और तालाबों में गाद होने की बात करते हैं, जबकि हकीकत में गाद तो उन्हीं के माथे पर है। सदा नीरा रहने वाली बावड़ी–कुओं को बोरवेल और कचरे ने पाट दिया तो तालाबों को कंक्रीट का जंगल निगल गया।

एक तरफ प्यास से बेहाल होकर अपने घर–गांव छोड़ते लोगों की हकीकत है, तो दूसरी ओर पानी का अकूत भंडार! यदि जल संकटग्रस्त इलाकों के सभी तालाबों को मौजूदा हालात में भी बचा लिया जाए तो वहां के हर इंच खेत को तर सिंचाई, हर कंठ को पानी और हजारों हाथों को रोजगार मिल सकता है।

श्रेयस तलपड़े–विजय राज की कर्तम भुगतम का ट्रेलर जारी, सभी को कर्मों का फल यहीं भुगतना होगा...

श्रेयस तलपड़े और विजय राज की आगामी मनोवैज्ञानिक थ्रिलर फिल्म कर्तम भुगतम का दमदार ट्रेलर जारी हो चुका है। यह फिल्म कर्म और भाग्य की रोमांचक यात्रा पर ले जाएगी। दिलचस्प ट्रेलर एक ऐसी दुनिया की झलक पेश करता है, जहां मानव मनोविज्ञान ज्योतिष के रहस्यों से टकराता है। कर्तम भुगतम कर्म के जटिल जाल को दिखाता है और इस शाश्वत सत्य को साबित करता है कि कर्मों के परिणाम होते हैं।

टीजर एक ऐसी कहानी की ओर इशारा करता है, जो सदियों पुरानी सच्चाई को दिखती है। हर कार्य का एक परिणाम होता है। ट्रेलर में देखने को मिला की श्रेयस तड़पड़े का किरदार हंसी–खुशी जिंदगी जी रहा होता है, लेकिन अचानक उसके जीवन में कुछ ऐसी घटनाएं घटती हैं, जिसके बाद वह हताश हो जाता है और जब उनसे कहीं से उम्मीद नहीं मिलती तो वह ज्योतिषी के कर्म और भाग्य के खेल के जाल में फंस जाता है।

श्रेयस का किरदार समाधान पाने के लिए ज्योतिषी बने विजय राज के पास पहुंच जाता है, जो कर्म और उसके फल के बारे में बता रहा है। उन्होंने कहा कि जो होना है वो होकर रहेगा। जन्म, मृत्यु सब लिखी होती है, जो किया वो कर्म है, जो कर रहा है, वो धर्म है और जो होगा, वो कर्तम भुगतम। ज्योतिष और कर्म के प्राचीन सार्वभौमिक सत्यों को जोड़ते हुए फिल्म यह बताने की कोशिश करेगी कि कैसे हर काम के कुछ निश्चित परिणाम होते हैं, जैसी कि सदियों पुरानी हिंदी कहावत है कि जैसा करोगे, वैसा भरोगे।

काल और लक जैसी फिल्में बना चुके सोहम ने इस फिल्म का निर्देशन किया है। श्रेयस के अलावा फिल्म में विजय राज, मधु और अक्षा परदासानी जैसे प्रतिभाशाली कलाकार भी दिखेंगे। मेकर्स का दावा है कि कर्तम भुगतम एक ऐसी साइकोलॉजिकल थ्रिलर है, जो दर्शकों को शुरू से अंत तक अपनी सीटों से बांधे रखेगी। यह फिल्म 17 मई को सिनेमाघरों में रिलीज होने के लिए तैयार है। फिल्म का निर्माण गांधार फिल्म्स एंड स्टूडियो प्राइवेट की ओर से किया गया है। इस फिल्म को पूरे भारत में हिंदी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम भाषाओं में रिलीज किया जाएगा।

पेरिस 2024 में कौन सा पहलवान भाग लेगा, इसका फैसला डब्ल्यूएफआई करेगाः संजय सिंह

नई दिल्ली, छह भारतीय पहलवानों द्वारा ओलंपिक कोटा हासिल करने के बाद डब्ल्यूएफआई के अध्यक्ष संजय सिंह ने कहा है कि पेरिस 2024 में कौन सा पहलवान भाग लेगा, इसका फैसला महासंघ करेगा, न कि भारतीय ओलंपिक संघ। संजय सिंह ने कहा कि शोपीस इवेंट के लिए अंतिम टीम चुनने के लिए नए सिरे से परीक्षण आयोजित किए जाएंगे।डब्ल्यूएफआई के अध्यक्ष संजय सिंह ने बताया, पेरिस ओलंपिक में कौन सा पहलवान भाग लेगा, इसका फैसला आईओए नही, बल्कि भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) करेगा और साथ ही नए सिरे से ट्रायल भी होंगे। पहले ऐसी खबरें थी कि आईओए पहलवानों पर अंतिम फैसला लेगा, लेकिन डब्ल्यूएफआई ने इन तमाम खबरों को खारिज कर दिया है। उन्होंने कहा, हमें यूडब्ल्यूडब्ल्यू (यूनाइटेड वर्ल्ड रेसलिंग) से मंजूरी मिल गई है। टीम चुनना हमारा कर्तव्य होगा। इस्तांबुल में हाल ही में संपन्न विश्व क्वालीफायर में, जो पहलवानों के लिए अंतिम पेरिस ओलंपिक क्वालीफाइंग इवेंट था, अमन सहरावत और निशा दहिया ने कुश्ती में भारत के कोटा की संख्या बढ़ाकर छह तक पहुंचा दी है।अंतिम पंघाल (53 किग्रा) ने 2023 विश्व कुश्ती चैंपियनशिप से भारत के लिए पहला कोटा अर्जित किया, जबकि विनेश फोगट (50 किग्रा), अंशू मलिक (57 किग्रा) और रीतिका हुडा (76 किग्रा) ने पिछले महीने बिश्केक में आयोजित एशियाई क्वालीफायर में और कोटा हासिल किये।

अंतिम घरेलू मैच में एम्बाप्पे का गोल, पीएसजी की टूलूज के खिलाफ 1–3 से हार

पेरिस, किलियन एम्बाप्पे ने रविवार को पार्क डी प्रिंसेस में पीएसजी के लिए अपना अंतिम घरेलू मैच खेला। हालांकि पीएसजी को टूलूज़ के खिलाफ घरेलू मैदान पर 1–3 से हार का सामना करना पड़ा।एम्बाप्पे ने आठवें मिनट में गोल करके पीएसजी को पेरिसियन क्लब के लिए अपने आखिरी घरेलू मैच में शुरुआती बढ़त दिला दी।ओउस्माने डेम्बेले ने फ्रांसीसी टीवी चैनल कैनाल से कहा, इस हार ने टीम के माहौल को थोड़ा खराब कर दिया है। अपने घरेलू दर्शकों के सामने इस तरह हारना हमेशा निराशाजनक होता है, भले ही आप चैंपियन हों। हमें हार के बाद चीजों पर पुनर्विचार करने की जरूरत है।

पीएसजी के साथ एम्बाप्पे का समय अभी खत्म नहीं हुआ है क्योंकि 2022 फीफा विश्व कप के शीर्ष स्कोरर को फ्रेंच कप के फाइनल में ओलिम्पिक ल्यों का सामना करने से पहले नीस और मेट्ज़ के खिलाफ लीग में दो मैच खेलने बाकी हैं, जो मई में खेला जाना है।डेम्बेले ने कहा, उन्होंने क्लब को बहुत कुछ दिया, उन्होंने बहुत कुछ किया। उन्होंने जो कुछ भी किया है उससे हम खुश हैं। वह पीएसजी में अच्छी तरह से परिपक्वहुए। उन्होंने यहां बहुत कुछ हासिल किया है। वह पीएसजी के दिग्गज हैं। हमें उन पर गर्व है।

ऐसा कहा जाता है कि 25 वर्षीय खिलाड़ी ने पहले ही रियल मैड्रिड के साथ अनुबंध करने का फैसला कर लिया है और आधिकारिक घोषणा 14 जुलाई से जर्मनी में खेले जाने वाले यूरो से पहले की जाएगी।रियल मैड्रिड ने विश्व फुटबॉल के सबसे बड़े सितारों में से एक के लिए एक बहुत ही विशेष घोषणा की योजना बनाई है।

थियेटर के बाद सिद्धार्थ मल्होत्रा की फिल्म योद्धा ने ओटीटी प्लेटफॉर्म अमेजन प्राइम वीडियो पर दी दस्तक

अभिनेता सिद्धार्थ मल्होत्रा की फिल्म योद्धा को इसी साल 15 मार्च को सिनेमाघरों में रिलीज किया गया था।लगभग 55 करोड़ रुपये की लागत में बनी इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर 32.45 करोड़ रुपये से अधिक का कारोबार किया था।अब योद्धा ओटीटी प्लेटफॉर्म अमेजन प्राइम वीडियो पर दस्तक दे चुकी है।ऐसे में जो दर्शक इस फिल्म को सिनेमाघरों में नहीं देख पाए, वह अब इसे घर बैठे आराम से ओटीटी पर देख सकते हैं।योद्धा का निर्देशन सागर अम्ब्रे और पुष्कर ओझा ने किया है। फिल्म की कहानी सागर अम्ब्रे ने लिखी है।हीरू यश जौहर, करण जौहर, अपूर्व मेहता और शशांक खेतान इस फिल्म के निर्माता हैं।योद्धा में सिद्धार्थ की जोड़ी पहली बार राशि खन्ना के साथ बनी है। दिशा पाटनी ने भी इस फिल्म में अपनी अदाकारी का तड़का लगाया है।योद्धा धर्मा प्रोडक्शंस की पहली एरियल एक्शन फ्रैंचाइजी है, जिसकी कहानी एक प्लेन हाइजैक पर आधारित है।रोमांचक एक्शन–ड्रामा का निर्देशन सागर अंब्रे और पुष्कर ओझा की नवोदित निर्देशक जोड़ी द्वारा किया गया है. वहीं मेंटर डिसिप्लिन एंटरटेनमेंट के एसोसिएशन से प्राइम वीडियो और धर्मा प्रोडक्शन द्वारा प्रेजेंट ये फिल्म हीरू यश जौहर, करण जौहर, अपूर्व मेहता और शशांक खेतान ने प्रोड्यूस की गई है योद्धा एक फौजी, अरुण कात्याल (सिद्धार्थ मल्होत्रा द्वारा अभिनीत) की कहानी है. अरुण एक स्पेशल टास्क फोर्स को लीड करता है. उस पर उन सिचुएशन और मिशन को संभालने की जिम्मेदारी होती है जिन्हें कोई और हैंडल नहीं कर पाता है. हालांकि जब उसका एक मिशन बुरी तरह से गलत हो जाता है, तो सारा दोष अरुण पर मढ़ दिया जाता है, और उसे ड्यूटी से हटा दिया जाता है. फिल्म में टर्निंग पॉइंट तब आता जब अरुण सालों बाद एक फ्लाइल से ट्रैवल कर रहा होता है लेकिन वो फ्लाइट हाईजैक हो जाती है अब अरुण कैसे यात्रियों को आतंकियों से बचाएगा?

विजय देवराकोंडा के फैंस को एक और बड़ा तोहफा

अर्जुन रेड्डी स्टार विजय देवराकोंडा के 35वां बर्थडे के मौके पर एक्टर की दूसरी फिल्म वीडी 14 का ऐलान हुआ है. मैत्री मूवी मेकर्स ने एक्टर को बर्थडे विश कर उनके फैंस को बड़ा तोहफा दिया है. मेकर्स ने बीती 8 मई को एलान किया था कि वह 9 मई को एक्टर के फैंस को बड़ा तोहफा देंगे. वहीं, मेकर्स ने अपने ऑफिशियल एक्स हैंडल पर एक्टर की नई फिल्म का एलान किया है. साथ ही एक पोस्टर भी छोड़ा है. इसके साथ ही फिल्म से जुड़ी अहम जानकारी भी शेयर की है. मैत्री मूवी मेकर्स ने विजय देवराकोंडा की नई फिल्म वीडी14 से एक पोस्टर शेयर कर लिखा है, महानता लिखी नहीं जाती है,

टी20 विश्व कप से पहले टॉम मूडी ने टीम इंडिया पर उठाए सवाल!

नई दिल्ली, टी20 विश्व कप नजदीक आने के साथ ही पूर्व ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर टॉम मूडी ने सवाल उठाया है कि क्या भारत विश्व कप जीतने के लिए उस स्तर का क्रिकेट खेल पाएगा, जो वर्ल्ड चैंपियन बनने के लिए जरूरी है।

टी20 वर्ल्ड कप 1 जून से वेस्टइंडीज और अमेरिका में निर्धारित है, जबकि आईपीएल 26 मई को समाप्त होगा।

आईपीएल 2024 के लिए आधिकारिक टीवी ब्रॉडकास्टर स्टार स्पोर्ट्स के क्रिकेट विशेषज्ञ और कमेंटेटर टॉम मूडी ने बताया, ऑस्ट्रेलिया ने ऐतिहासिक रूप से इन आईसीसी प्रतियोगिताओं में बहुत प्रदर्शन किया है क्योंकि वे बड़े टूर्नामेंट अच्छा खेलते हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि भारत को एक बहुत मजबूत टीम मिली है और उनके पास बहुत सारे मैच विनर हैं, लेकिन सवाल यह है कि क्या वे इस टीम को इतने कम समय में स्टेबल बना सकते हैं। आईपीएल के तुरंत बाद वर्ल्ड कप का आगाज होना है और टीम के पास तैयारियों के लिए ज्यादा समय नहीं होगा।

आईपीएल के लीग चरण के समापन के बाद टीम इंडिया के खिलाड़ियों का पहला बैच अमेरिका के लिए रवाना होगा। नॉकआउट चरण में आगे बढ़ने वाले खिलाड़ी आईपीएल 2024 फाइनल के बाद टीम में शामिल होंगे। इससे कई लोगों के मन में सवाल उठ रहा है कि क्या खिलाड़ी नई परिस्थितियों के साथ इतने कम समय में तालमेल बिठा पाएंगे।

टॉम मूडी ने कहा, इस स्तर पर यह कहना बहुत मुश्किल है, लेकिन मुझे लगता है कि यह विश्व कप जैसा ही होगा। हमें अभी तक यह समझ में नहीं आया है कि अमेरिका में परिस्थितियां कैसी होंगी। वहां ड्रॉप–इन पिचें होंगी।

एक नजर

दुष्कर्म के आरोपी को पुलिस ने किया गिरफ्तार

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : कोटद्वार क्षेत्र की एक नाबालिग से दुष्कर्म करने वाले आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। मामले में पीड़िता के पिता की ओर से पुलिस को तहरीर दी गई थी। नगर निगम क्षेत्र के अंतर्गत एक किशोरी को पेट दर्द की शिकायत पर कोटद्वार के बेस चिकित्सालय में लाया गया। जांच में पता चला कि किशोरी पांच माह की गर्भवती है। किशोरी के गर्भवती होने की जानकारी मिलते ही स्वजनों में हड़कंप मच गया। स्वजनों ने किशोरी से पूरे मामले पर जानकारी मांगी तो पता चला कि मानपुर निवासी एक युवक ने उससे मारपीट व दुष्कर्म किया। कोतवाली प्रभारी मणिभूषण श्रीवास्तव ने बताया कि स्वजनों की ओर से दी गई तहरीर के आधार पर मानपुर निवासी अभिषेक पाल के खिलाफ मामला दर्ज किया गया। बताया कि मामला दर्ज करने के बाद अभिषेक को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है।

प्रशासनिक अधिकारी पर शराब के नशे में अभद्रता का आरोप

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वार : जीवानंदपुर निवासी आशीष रौतेला ने तहसील में तैनात मुख्य प्रशासनिक अधिकारी पर शराब के नशे में अभद्रता का आरोप लगाया। उन्होंने उपजिलाधिकारी से मामले की जांच करने की मांग की है। आशीष रौतेला ने कहा कि सोमवार को सुबह ग्यारह बजे वह अपने विवाह का पंजीकरण में हस्ताक्षर करवाने के लिए प्रशासनिक अधिकारी के कक्ष में गए। आरोप है कि प्रशासनिक अधिकारी ने शराब पी रखी थी। आरोप यह भी है कि अधिकारी ने कागज पर हस्ताक्षर करने के बजाय उल्टा गाली-गलौच करना शुरू कर दिया। विवाह पंजीकरण के कागज भी फेंक दिए। आशीष रौतेला ने उपजिलाधिकारी से उक्त अधिकारी के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की है।

ग्रामीणों ने पेयजल संकट से निजात दिलाने की मांग

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : कांदेखाल पंपिंग पेयजल योजना से नियमित पानी की आपूर्ति नहीं होने से योजना से जुड़े कुंडी सबधारखाल के उपभोक्ताओं को दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। उपभोक्ताओं को इन दिनों पेयजल किल्लत से दो-चार होना पड़ रहा है। ग्रामीणों ने जल संस्थान के अफसरों से जल्द पेयजल संकट से निजात दिलाने की मांग की है।कुंडी सबधारखाल सहित करीब 40 से अधिक गांवों के लिए देवप्रयाग से यह योजना बनाई गई है। इन दिनों योजना से कुंडी सबधारखाल में पेयजल की सप्लाई चरमरा गई है। सोमवार को ग्रामीणों के एक शिष्टमंडल ने जलसंस्थान और जलनिगम के अफसरों से भी मुलाकात की और समस्या का निस्तारण करने की गुहार लगाई। बताया कि बीते दो सप्ताह से यह दिक्कत बनी हुई है और तीन या चार दिन छोड़कर यह पानी मिल रहा है। बताया गांव में करीब 200 परिवार है। इसके साथ ही सबधारखाल बाजार में भी पानी नहीं मिल पा रहा है।

वन विभाग की नई पहल शुरू, बना रहा पत्तों और पिरुल से खाद

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : जंगलों को आग से बचाने और खाद बनाने के लिए वन विभाग ने नई पहल शुरू की है। वन विभाग द्वारा इन दिनों चलाए जा रहे सफाई अभियान के दौरान बड़ी मात्रा में इकट्ठा किए गए पत्तों और पिरुल का उपयोग वन विभाग खाद बनाने के लिए कर रहा है। इससे जहां जंगलों में आग की घटनाएं कम होगीं वहीं जमीन की उर्वरक शक्ति भी बढ़ेगी। नागदेव रेंज पौड़ी के रेंजर ललित मोहन सिंह नेगी ने बताया कि मई महीने में जंगलों में पेड़ों से पत्ते और पिरुल के गिरने पर वनाग्नि से सुरक्षा के लिए बृहद सफाई अभियान चलाया जाता है। जहां से एकत्रित की गई पत्तियों और पिरुल को अब नई पौध के लिए वन विभाग की नर्सरी में खाद निर्माण किया जा रहा है। बताया कि 5 पिट खाद निर्माण के लिए नागदेव रेंज में बनाए गए हैं तो वहीं 5 पिटों का निर्माण खिर्सू पौधालय में किया गया है। बताया कि इस पहल से जहां जमीन की उर्वरक शक्ति बढ़ेगी, वहीं जंगलों से इकट्ठा किए गए पिरुल और पत्तों का सकारात्मक उपयोग भी हो सकेगा।

बदरीनाथ में व्यापारियों ने बंद रखा बाजार

चमोली : बदरीनाथ कपाट खुलने के दूसरे दिन सोमवार को बामणी गांव की जनता, हक हकूकधारी, तीर्थ पुरोहित समाज ने प्रशासन और बीकेटीसी के खिलाफ प्रदर्शन किया।

प्रदर्शनकारियों के समर्थन में स्थानीय व्यापारियों ने बाजार भी बंद रखा। प्रदर्शकारियों का आरोप है कि उन्हें मंदिर दर्शन के पारंपरिक अधिकार से वंचित रखा जा रहा है।

हिमानी व सिमरन रावत रहे अव्वल

12वीं में 94.20 प्रतिशत अंक पाने वाली हैप्पी होम स्कूल की छात्रा सिमरन रावत

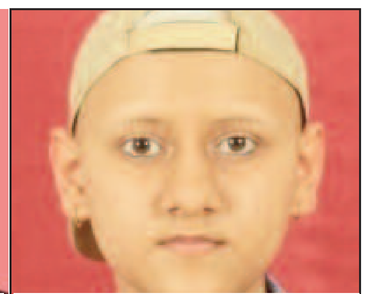

10 वीं में 97.2 प्रतिशत अंक पाने वाली हैप्पी होम स्कूल की छात्रा हिमानी

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : सीबीएसई की बोर्ड परीक्षा में हैप्पी होम स्कूल की छात्रा हिमानी ने 97.2 प्रतिशत अंक व 12वीं में सिमरन रावत ने 94.20 अंकों के साथ विद्यालय में टॉप किया है।

जौनपुर स्थित हैप्पी होम स्कूल के बच्चों ने बोर्ड परीक्षाओं में बेहतर प्रदर्शन किया।

कक्षा 12वीं से विज्ञान वर्ग में सिमरन रावत 94.20 प्रतिशत, अंशुल लखेड़ा 93.20 प्रतिशत, आदर्श रावत 87 प्रतिशत एवं मिष्टी अग्रवाल ने 86 प्रतिशत अंकों के साथ प्रथम रहे। वाणिज्य वर्ग में खुशबू ने सर्वाधिक 92.2 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। कक्षा 10वीं से हिमानी 97.2 प्रतिशत, अथर्व 96 प्रतिशत, समीक्षा, संजय 93 प्रतिशत, आदित्य शर्मा 92 प्रतिशत, श्रेया 91 प्रतिशत, अमीषा राज सिंह 90 प्रतिशत, मनीष कुमार शर्मा 90 प्रतिशत और नैना द्विवेदी ने 90 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन किया। विद्यालय के छात्र अथर्व ने गणित एवं सामाजिक विज्ञान विषय में 100 प्रतिशत अंक एवं विद्यालय की छात्रा हिमानी ने सामाजिक विज्ञान विषय में 100 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।

आदित्य ने प्राप्त किए 96 व संजना ने प्राप्त किए 85 प्रतिशत अंक

सीबीएसई दसवीं व 12वीं बोर्ड परीक्षा में नवयुग स्कूल ने लहराया परचम

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वार : सीबीएसई दसवीं व 12वीं की बोर्ड परीक्षा में नवयुग पब्लिक स्कूल के छात्र-छात्राओं ने बेहतर प्रदर्शन किया। दसवीं में आदित्य धूलिया ने 96 व 12वीं में संजना ने 85 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। आदित्य धूलिया 96 प्रतिशत अंकों के साथ प्रथम स्थान, पीयूष 94 प्रतिशत अंकों के साथ द्वितीय स्थान व हर्षिता रावत 93.2 प्रतिशत अंकों के साथ तृतीय स्थान पर रही। इसके साथ ही कक्षा 12वीं में संजना 85 प्रतिशत अंकों के साथ प्रथम, अंशिका 79 द्वितीय व कृतिका 78 प्रतिशत अंकों के साथ तृतीय स्थान पर रही। प्रधानाचार्या नीलम नेगी ने सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दी।

एसजीआरआर में शीतल व शिवांश रहा प्रथम

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वार : सीबीएसई बोर्ड परीक्षा परिणामों में एसजीआरआर के इंटर के विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। प्रधानाचार्य डीएम रतूड़ी ने बताया कि इंटरमीडिएट में शीतल ने 97.8, शिवांश उनियाल ने 96.4, जिविशा फुलोरिया ने 96.4, कावेरी ध्यानी ने 95.8, अनुकृति खंतवाल ने 93.8, आकांक्षा कठैत ने 93.2, दिव्यांशु रावत ने 93,मीमांसा रावत ने 92.8, सुमित गुसाई ने 92.6, आदित्य खंतवाल ने 92.2 और वैभवी पोखरियाल ने 92 प्रतिशत अंक हासिल किए। भाबर क्षेत्र स्थित एवीएन स्कूल में सौरभ बडोला ने इंटरमीडिएट मैनिटीज स्ट्रीम में 97, यश नेगी ने साइंस स्ट्रीम में 96.8 और आयुष ध्यानी ने 96 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन

ब्लूमिंग वेल की छात्रा प्राचिता ने प्राप्त किए 97.4 प्रतिशत अंक

97.4 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाली ब्लूमिंग वेल की छात्रा प्राचिता

दसवीं में 96.4 प्रतिशत अंक पाने वाला आरसीडी पब्लिक स्कूल का छात्र अभय थपलियाल

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : सीबीएसई दसवीं बोर्ड परीक्षा में ब्लूमिंग वेल पब्लिक स्कूल का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा। विद्यालय की छात्रा प्राचिता ने 97.4 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय में अव्वल स्थान प्राप्त किया।

विद्यालय के कुल 15 विद्यार्थियों ने 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया। छात्रा प्राचिता ने सर्वाधिक 97.4 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। पावनी नेगी ने 96.4 प्रतिशत व शिवम ध्यानी ने 96 प्रतिशत अंक हासिल किए। वहीं, आरसीडी पब्लिक स्कूल में दसवीं के छात्र अभय थपलियाल ने 96.4 प्रतिशत, प्रियांशी नेगी ने 95 प्रतिशत, अंकित दुदपुडी ने 94 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। विद्यालय का परीक्षा परिणाम 96 प्रतिशत रहा।

हैरिटेज में छात्र राघव व साक्षी कोटनाला रही अव्वल

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वार : सीबीएसई दसवीं बोर्ड परीक्षा में हैरिटेज के छात्र राघव ने 97 प्रतिशत व साक्षी कोटनाला ने 94.8 प्रतिशत अंकों के साथ विद्यालय में टॉप किया। 12वीं में साक्षी कोटनाला ने 94.8 प्रतिशत, दीपांशी ने 94.8 प्रतिशत, कनिष्का भाटिया ने 93.6 प्रतिशत, नंदिनी ने 93 प्रतिशत, ज्योतिका ने 92.2 प्रतिशत व अनामिका बिष्ट ने 91.6 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। दसवीं में राघव पडिय ने 97 प्रतिशत, अनुसरया अंशारी ने 95.4 प्रतिशत, अंशिका अग्रवाल ने 95 प्रतिशत, अनुष्का रावत ने 94.2 प्रतिशत, अविरल ने 93.8 प्रतिशत व आशुतोष ने 93.8 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।

इंटर में जयेश, अमित और कृष रहे स्कूल टॉपर

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ी : सोमवार को सीबीएसई के परीक्षा परिणाम को लेकर छात्र-छात्राओं और अभिभावकों में उत्साह देखा गया। परिणाम आते ही स्कूलों में जहां पूरा स्टाफ सोमवार को परीक्षा परिणाम में ही व्यस्त दिखा, वहीं छात्रों के बीच इसकी चर्चा शुरू हो गई। इंटर के बाद सीबीएसई ने हाईस्कूल का परीक्षा परिणाम भी जारी कर दिया। इस परीक्षा में जिले से 3171 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी थी, जिसमें से 2789 परीक्षार्थी पास हुए है।

इंटर की परीक्षा में पौड़ी बीआर मॉडर्न स्कूल के छात्र जयेश कुकरेती ने सर्वाधिक 95.8 फीसदी अंक हासिल कर स्कूल टॉप किया। हिल इंटनेशनल पब्लिक स्कूल पौड़ी के छात्र अमित अग्रवाल 95.2 फीसदी अंकों के साथ दूसरे स्थान पर रहे। एसजीआरआर के छात्र कृष भंडारी ने 94 फीसदी अंक हासिल किए। हिल इंटरनेशनल स्कूल पौड़ी से साइंस के छात्र अमित अग्रवाल के साथ ही अक्षित 89.2 फीसदी के साथ दूसरे स्थान पर रहे, जबकि छात्रा वैष्णवी ने 83 फीसदी अंकों के साथ तीसरा स्थान हासिल किया। स्कूल की प्रधानाचार्य अनिता रावत ने बताया कि स्कूल में 24 छात्र-छात्राओं ने परीक्षा दी थी, जिसमें से 23 पास हुए। एसजीआरआर स्कूल पौड़ी में साइंस छात्र कृष भंडारी ने जहां स्कूल टॉप किया वहीं दूसरे स्थान पर 92 फीसदी अंकों के साथ अखिल रावत रहे।

बीएड़ में प्रवेश परीक्षा के लिए 20 मई तक करें आवेदन

श्रीनगर गढ़वाल : हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विवि के बीएड, बीपीएड, एमएड, एमपीएड प्रवेश परीक्षा की आवेदन फार्म भरने की तिथि बढ़ा दी गई है। गढ़वाल विवि के परीक्षा नियंत्रक एवं प्रवेश परीक्षा के कोर्डिनेटर प्रो. अनिल कुमार नौटियाल ने नोटिफिकेशन जारी करते हुए बताया कि सत्र 2024-25 की बीएड, बीपीएड, एमएड, एमपीएड प्रवेश परीक्षा के आवेदन फार्म भरने की अंतिम तिथि 20 मई तक बढ़ा दी गई है। प्रो. नौटियाल ने बताया कि सत्र 2023-2024 के स्नातक और स्नातकोत्तर सम सेमेस्टर के मुख्य और बैक पेपर के परीक्षा फार्म 1000 रुपये विलम्ब शुल्क के साथ 14 मई से 15 मई तक भरे जायेंगे। कहा कि महाविद्यालय एवं संस्थान परीक्षा आवेदन पत्रों का सत्यापन करने के पश्चात, आवेदन पत्र, प्रमाणित सूची एवं सांख्यिक आंगणन सहित विवि 17 मई तक जमा करना सुनिश्चित करें। (एजेंसी

पद्मश्री डा. यशवंत सिंह कठोच को किया सम्मानित

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : विकासखंड एकेश्वर के ग्रामीणों ने पद्मश्री डा. यशवंत सिंह कठोच के गांव पहुंचकर उन्हें सम्मानित किया। इस दौरान डा. कठोच ने ग्रामीणों को अपनी प्राथमिक शिक्षा से लेकर पद्मश्री सम्मान मिलने तक के बारे में बताया।

मासौ स्थित डा. यशवंत सिंह कठोच के गांव पहुंचकर ग्रामीणों ने उन्हें सम्मानित किया। मवालस्यूं के ग्रामीणों ने कहा कि पद्मश्री सम्मान मिलने उनके लिए गर्व की बात है। कहा कि जल्द ही उनकी उत्तराखंड इतिहास पर दो पुस्तकें और प्रकाशित हो रही है, जिसके माध्यम से वह देश-दुनिया तक उत्तराखंड के इतिहास को पहुंचाना चाहते हैं। उन्होंने अपने लेखन व शोध कार्य में अपनी पत्नी

पद्मश्री डा.यशवंत सिंह कठोच के आवास में डा.कठोच को सम्मानित करने पहुंचे ग्रामीण

गोदांबरी देवी के सहयोग को भी सराहा। कहा कि बीमार होने के बाद उनकी पत्नी उनका पूरा सहयोग देती है। वक्ताओं ने कहा कि डा. यशवंत सिंह कठोच ने पूरे प्रदेश का नाम रोशन किया है। इस मौके पर श्रीनगर नगर पालिका के पूर्व अध्यक्ष कृष्णानंद मैठाणी, उमा घिल्डियाल, कुंदन रावत, ऊषा रावत, कुलदीप रावत, रामेश्वर रावत, विनोद बिष्ट, विजय सिंह रावत, दिलीप सिंह रावत, कमल सिंह रावत, अनिल स्वामी, रणवीर रावत, नरेंद्र रावत, ताजवर रावत, किशोर रावत, बेलम रावत, राजीव थपलियाल, कैलाश थपलियाल, शांति रावत, सीमा थपलियाल, करण रावत, हरी रावत, दीप सिंह रावत, प्रेम रावत, सतीश थपलियाल आदि मौजूद रहे।

धूमधाम से मनाया राआप्रावि कोटल मंडा का वार्षिकोत्सव

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : विकासखण्ड द्वारीखाल के राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय कोटल मंडा का पांचवां वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस दौरान छात्र-छात्राओं केसांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति ने मंच पर इंद्रधनुषी रंगों की छटा बिखेरकर उपस्थित जनता का मन मोह लिया।

मुख्य अतिथि खंड शिक्षा अधिकारी डॉ. सुरेंद्र सिंह नेगी ने दी प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। तत्पश्चात छात्राओं ने सरस्वती वंदना और स्वागत गीत की प्रस्तुति दी। इसके बाद छात्र-छात्राओं ने नंदा देवी राजजात यात्रा, आधा है चंद्रमा गीत प्रस्तुत किए गए। इसके अलावा छात्रों ने लोकगीत, अंग्रेजी नाटक मंचन, समूह गान, इत्यादि कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी प्रतिभा का प्रर्दशन किया। विद्यालय की प्रधानाध्यापिका आशा बुड़ाकोटी ने विद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट के माध्यम से विद्यालय की विगत वर्ष की उपलब्धियों को प्रस्तुत किया। इस अवसर पर स्व. श्री

गोवर्धन भारती कोटल मंडा स्मृति में दी जाने वाली छात्रवृति वितरित की गई। जिसमे प्रत्येक कक्षा में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को क्रमशः 1000, 500, 500 की धनराशि दी गई। मुख्य अतिथि डॉ. सुरेंद्र सिंह नेगी द्वारा सभी छात्र-छात्राओं को उपहार स्वरूप शैक्षिक सामग्री दी गई। साथ ही शैक्षणिक गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों एवं शिक्षकों को सम्मानित किया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में ग्राम सभा सोलिया, कोटलमंडा, गहड़, बैरगांव के महिला मंगल दल, अभिभावकों ने सहयोग किया। इस मौके पर बीआरसी समन्वयक श्रीमती मानवी कोटनाला, समाजसेवी अर्जुन सिंह रावत, राइका के प्रधानाचार्य एनएस रावत, भारती शर्मा, शालिनी गुसांई, पुष्पा भट्ट, संजय डोबरियाल, विवेकानंद मधवाल आदि मौजूद थे।

केवि नई टिहरी में कृष्णा रावत और नंदिनी रहे टॉपर

नई टिहरी : सीबीएसई 12वीं में केंद्रीय विद्यालय नई टिहरी नगर का रिजल्ट शत प्रतिशत रहा है। 12वीं कॉमर्स में 19 और साइंस में 24 छात्र-छात्राओं ने परीक्षा दी थी। जिसमें सभी पास हुए हैं। शत-प्रतिशत रिजल्ट के लिए प्रधानाचार्य प्रदीप चंद्र थपलियाल सभी अध्यापक-अध्यापिकाओं और छात्रों को शुभकामनाएं दी। प्रधानाचार्य ने बताया कि 12वीं साइंस में कृष्णा रावत ने 89.6 प्रतिशत पाकर कॉलेज टाप किया है। जबकि प्रांजल ने 86.8 प्रतिशत और आंचल चौहान ने 85.8 प्रतिशत अंक हासिल किए। साइंस के सभी 25 छात्र उर्तीण हुए हैं। इसी तरह से कॉमर्स में नंदिनी ने 85.4 प्रतिशत अंक हासिल कर कालेज में अव्वल स्थान बनाया है। सुमित सिंह पुंडीर ने 83.4 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। जबकि देवांश उनियाल ने 81.8 प्रतिशन नंबर लाकर विद्यालय में तीसरा स्थान पाया है। प्रधानाचार्य थपलियाल ने सभी छात्रों को उज्वल भविष्य की कामना करते हुए शुभकामाएं प्रेषित की हैं। (एजेंसी)

वैद्य, नकोट बिलकेदार, धनचड़ा, दिगोली गांव में पेयजल किल्लत शुरू

श्रीनगर गढ़वाल : नगर निगम श्रीनगर के अंतर्गत वैद्य गांव, नकोट बिलकेदार, धनचड़ा और दिगोली गांव में बढ़ती गर्मी के साथ पेयजल किल्लत शुरू हो गई है। सोमवार को स्थानीय लोगों ने जल निगम के अधिशासी अभियंता को ज्ञापन प्रेषित कर क्षेत्र के लिए नई पंपिंग पेयजल योजना बनाने की मांग की है।

ज्ञापन में भाजपा मंडल अध्यक्ष जितेंद्र धिरवाण, जितेंद्र रावत, बिपेंद्र सिंह बिष्ट, विनोद बडोनी, गुड्डी देवी, शोभा बिष्ट, पूजा ने कहा कि नगर निगम क्षेत्र का वैद्य गांव, नकोट बिलकेदार, धनचड़ा और दिगोली गांव में गर्मियों का सीजन शुरू होते ही पेयजल किल्लत हो जाती है।

कहा कि ग्रामीण गदेरे से आने वाले पानी से ही अपनी प्यास बुझाते हैं। गर्मी शुरू होते ही पेयजल स्रोत में पानी कम हो जाता है, जिससे ग्रामीणों को हैडपंप के सहारे पेयजल की आपूर्ति करनी पड़ती है। बताया कि बिलकेदार से एनआईटी और घुडदौड़ी इंजीनियरिंग कॉलेज के लिए दो-दो अपलिफ्टिंग पेयजल योजना बनाई गई है, लेकिन क्षेत्र के लिए कोई भी योजना नहीं बनाई गई है।

कहा कि पूर्व में क्षेत्रीय विधायक डा. धन सिंह रावत ने बिलकेदार क्षेत्र के लिए नयी पेयजल योजना बनाये जाने की घोषणा की थी। जिस पर विभाग सर्वे भी कर चुका है, किंतु एक साल बाद भी पेयजल योजना को लेकर कोई भी कार्यवाही अमल में नहीं लाई गयी है। ज्ञापन देने वालों में सीया, हरदीप, सरिता देवी, पिंकी नेगी, संजय रावत, राकेश उनियाल, मोनू भट्ट, सुभाष बमराड़ा, अर्जुन बुटोला, अंकित रावत आदि मौजूद थे। उधर नगर निगम की एई दीक्षा नौटियाल ने बताया कि नगर निगम के क्षेत्रांर्गत बिलकेदार में कैबिनेट मंत्री डा. धन सिंह रावत ने नई पेयजल पंपिंग योजना की घोषणा की थी। विभाग द्वारा एक माह के भीतर पेयजल पंपिंग योजना का इस्टीमेट तैयार कर दिया जाएगा। (एजेंसी)

इंटर में अखिल और हाईस्कूल में अभिषेक पंवार रहे टॉपर

नई टिहरी : केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) की 10वीं और 12वीं कक्षा का सोमवार को परिणाम घोषित होते ही छात्र-छात्राओं के चेहरे खुशी से खिल उठे। उन्होंने शिक्षकों और सहपाठियों को मिठाई खिलाकर खुशी का इजहार किया। 12वीं की परीक्षा में न्यू टिहरी इंटरनेशनल स्कूल के छात्र अखिल डंग ने 98.2 प्रतिशत अंक हासिल कर जिले में टॉप किया है। वहीं 10वीं की परीक्षा में सेंट एंथोनी पब्लिक स्कूल के अभिषेक पंवार ने 97 प्रतिशत अंकों के साथ जनपद में टॉपर बने। परीक्षा में न्यू टिहरी इंटरनेशनल, सेंट एंथोनी, जवाहर नवोदय विद्यालय के छात्रों का दबदबा देखने को मिला। न्यू टिहरी इंटरनेशलन स्कूल की प्रबंधक शालिनी जॉली, प्रधानाचार्य प्रवीन भट्ट, परीक्षा प्रभारी देवाशीष उनियाल ने बताया कि 12वीं में सभी 77 छात्र-छात्राएं उत्तीर्ण रहे। अखिल डंग ने 98.2 प्रतिशत, आयुषी भट्ट ने 95.2, आन्या 95, गरिमा पंवार, आदर्श सिंह नेगी व सार्थक सेमवाल 94.2, प्रभव सेमवाल 94 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। 12 छात्रों ने 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए। जबकि 10वीं में 96 प्रतिशत अंक के साथ मिर्जा इर्फा बेग स्कूल टॉपर बनी। सक्षम पंवार 95.2 प्रतिशत अंकों के साथ दूसरे स्थान पर रहे। सभी 63 छात्र-छात्राएं उत्तीर्ण हुए। सेंट एंथोनी पब्लिक स्कूल के निदेशक गौतम बिष्ट, प्रधानाचार्य अनिल सेमल्टी, दाताराम जुयाल ने बताया कि इंटर में सभी 82 छात्र सफल रहे।

उत्कृष्ट कार्य करने पर नौ लोगों का किया सम्मान

चमोली : बीना स्मृति फाउंडेशन की ओर से बीते दिन जीआईसी सिलंगी के प्रांगण में बीना स्मृति सम्मान का आयोजन किया गया।

इस दौरान पर्यावरण, पत्रकारिता और लोक संस्कृति सहित विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने पर नौ लोगों को सम्मानित किया गया। पत्रकारिता के क्षेत्र में गोपेश्वर के वरिष्ठ पत्रकार क्रांति भट्ट को सम्मानित किया गया। फाउंडेशन के सचिव जितेंन्द्र कुमार ने कहा कि 12 मई 1999 को बीना बिष्ट बरतोली गांव के जंगलों में लगी आग को बुझाते समय बलिदान हो गई थी। उनका बलिदान हमेशा याद रखा जाएगा। उन्होंने ऋतु बसंत बोड़ी के आंदा मनखी बौड़ी नि आंदा..मार्मिक गीत के जरिये बीरबाला बीना बिष्ट को अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।

सुदामा चरित्र के माध्यम से दिया समाज में समानता का संदेश

कोटद्वार के नयागांव में सात दिवसीय भागवत कथा संपन्न

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : कोटद्वार के बलभद्रपुर नयागांव में सोमवार को भागवत कथा के अंतिम दिन कथा व्यास आचार्य देवी प्रसाद भट्ट ने सुदाम चरित्र और परीक्षित मोक्ष की कथा सुनाई। कथा के अंतिम दिन भारी संख्या में लोगों ने कथा श्रवण किया।

आचार्य देवी प्रसाद भट्ट ने कथा के अंतिम दिन सुदामा चरित्र से भक्तों के सामने दोस्ती की मिशाल पेश कर समाज में समानता का संदेश दिया। कहा कि कथा के सात दिन के श्रवण से पुण्य की प्राप्ति होती है। उन्होंने भागवत कथा को जीवन में उतारने का आग्रह किया। श्रेष्ठ

नयागांव कोटद्वार में भागवत कथा करते आचार्य देवी प्रसाद भट्ट।

कर्म से ही मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति होता है। उन्होंने शुकदेव द्वारा राजा परीक्षित को सुनाई गई भागवत कथा में विभिन्न प्रसंगों का वर्णन किया। साथ ही कथा में सुदामा चरित्र सुनकर श्रद्धालु भावुक हुए। सुदामा की मित्रता लोगों को युगों-युगों तक प्रेरित करती रहेगी। मित्र सबके जीवन में उपयोगी हो सकते हैं। भजन गायकों ने भी लोगों को अपनी प्रस्तुति से मंत्रमुग्ध किया। इस मौके पर कथा आयोजक सरोजनी चौहान, प्रकाश चौहान, राकेश चौहान, आशीष चौहान, आचार्य दीपक ध्यानी, कृष्णा गोदियाल, प्रकाश पोखरियाल, सुभाष पंत आदि मौजूद रहे।

सड़क सुरक्षा से जुड़े कार्यों को शीर्ष प्राथमिकता पर करें पूरा : एडीएम

जयन्त प्रतिनिधि।

चमोली : अपर जिलाधिकारी विवेक प्रकाश ने सोमवार को क्लेक्ट्रेट सभागार में सड़क सुरक्षा समिति की बैठक ली। उन्होंने निर्देशित किया कि सुरक्षित यातायात एवं सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए सड़क सुरक्षा से जुड़े कार्यों को प्राथमिकता पर पूरा किया जाए। अपर जिलाधिकारी ने कहा कि चारधाम यात्रा के दौरान सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए विशेष कदम उठाए जाए।

सड़क निर्माणदायी संस्थाएं अपनी सड़कों का रेग्यूलर निरीक्षण करें। सुरक्षित यातायात के लिए संकरे मार्ग, भूस्खलन क्षेत्र एवं अन्य संवेदनशील स्थानों पर क्रैश बैरियर व साइनेज लगाए जाए।

सेफ्टी के अन्तर्गत चिन्हित ब्लैक स्पॉटों का सुधारीकरण, क्रैश बैरियर, पैराफीट व साइनेज लगाने के अवशेष कार्यों को तत्काल पूरा किया जाए। सड़क दुर्घटना के मामलों में जो कारण सामने आए है, उनका तत्काल समाधान किया जाए और फोटोग्राफ सहित इसकी रिपोर्ट उपलब्ध करें। उन्होंने सड़कों पर नए संवेदनशील दुघर्टना स्थलों को चिन्हित करने के लिए समिति का गठन करने के निर्देश भी दिए।

अपर जिलाधिकारी ने कहा कि एसडीएम, पुलिस एवं परिवहन विभाग अभियान चलाकर सड़क सुरक्षा नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ चालान की सख्त कार्रवाई सुनिश्चित करें। ओवर स्पीड, ओवरलोडिंग और ड्रंक एंड ड्राइव की रोकथाम के लिए सघन चेकिंग करते हुए चालान की कार्रवाई की जाए। सड़क एवं पुल से मवेशियों को हटाने के लिए प्रभावी कदम उठाए जाए। इस दौरान उन्होंने सड़क दुर्घटनाओं में घायल व्यक्तियों की जानकारी लेते हुए घायलों के उपचार हेतु समुचित व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। बैठक में बताया गया कि मार्च और अप्रैल माह में 05 सड़क दुर्घटनाएं हुई है। पुलिस और परिवहन विभाग द्वारा माह अप्रैल में ओवर स्पीड के 22, भार वाहन में यात्री ढोने पर 14, मोबाइल पर बात करने में 07, शराब पीकर वाहन चलाने पर 07, बिना हेलमेट के 61, बिना सीट बेल्ट के 57, बिना डीएल के 97 तथा वाहन का परमिट, फिटनेस, प्रदूषण मामलों में 75 सहित कुल 1408 चालान किए गए है। बैठक में लोनिवि के अधीक्षण अभियंता राजेश चन्द्र, अधिशासी अभियंता राजवीर सिंह चौहान, एसीएमओ डा. एमएस खाती, सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी ज्योति शंकर मिश्र, नगर निकायों के अधिशासी अधिकारी सहित वर्चुअल माध्यम से सभी एसडीएम एनएच, लोनिवि, पीएमजीएसवाई, बीआरओ के अधिकारी वर्चुअल माध्यम से उपस्थित थे।

एसजीआरआर कर्णप्रयाग में नियति और शिवम रहे अव्वल

चमोली : एसजीआरआर कर्णप्रयाग (जयकंडी) में 12वीं की छात्रा नियति कैलखुरा ने 95.60 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय में प्रथम, जतिन खत्री ने 92.80 व आशिका बिष्ट ने 92.40 प्रतिशत अंक प्राप्त कर दूसरा व तीसरा स्थान प्राप्त किया। पीयूष भंडारी ने 91.40,आईशा ने 91.20, श्रुति तिवारी ने 89.60, अनन्या पांगती ने 88.80, पिहु भंडारी ने 86.60, गौरव सिंह ने 86.40, महक 86.20, रवीद्र खत्री व प्रत्यक्ष तोपाल ने 85.40, अभिजीत बहुगुणा ने 84.20, मनस्वी सिमल्टी ने 82.40 व नितिन सिंह ने 82.20 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। वहीं, 10वीं कक्षा में शिवम शर्मा ने 99.40 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय में प्रथम व अर्शदीप सिमल्टी ने 97.40 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विधालय में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। पुष्कर जोशी ने 96.20 व ईशांत सिंह ने 95.40 प्रतिशत अंक प्राप्त कर तीसरा व चौथा तथा रिद्धी रात्रा ने 94 प्रतिशत अंक प्राप्त कर पांचवा स्थान प्राप्त किया। सार्थक नैनवाल ने 93.40, हर्षित बिष्ट ने 93, शिवांश कुमेड़ी ने 93, तनुजा ने 92.80 व हार्दिक सेमवाल ने 90 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। स्तुति खंडुरी ने 89.80, अदिति पांगती ने 89.60, आयुष बिष्ट ने 89.40, समर्थ डिमरी ने 88.20, महक खत्री व संस्कृति थपलियाल ने 86 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।

एक नजर

मॉडर्न स्कॉलर्स चंबा में आशीष और इशान्वी ने किया टॉप

नई टिहरी : मॉडर्न स्कॉलर्स एकेडमी चंबा का सीबीएसई 12वीं का परिणाम शत-प्रतिशत रहा है। विद्यालय के प्रधानाचार्य विजेंद्र सिंह रावत ने रिजल्ट की जानकारी देते हुए बताया कि 12वीं में आशीष बेलवाल ने 92.6, संगीत रावत ने 92.4 और अनन्या पंवार ने 90.6 प्रतिशत अंक हासिल कर अव्वल रहे हैं। जबकि 10वीं की परीक्षा में इशान्वी नेगी ने 94.8, सृष्टी ने 90.2 और आस्था कुकरेती ने 90 प्रतिशत अंक हासिल कर स्कूल का नाम रोशन किया है। (एजेंसी)

हेली टिकट बुकिंग से जुड़ी फर्जी वेबसाइट पर एसटीएफ की नजरः कुर्वे

देहरादून। हेली टिकट बुकिंग से जुड़ी फर्जी वेबसाइट के खिलाफ एसटीएफ और साइबर सेल के स्तर से कार्रवाई और तेज की जाएगी। सोमवार को पर्यटन सचिव सचिन कुर्वे ने एक बयान में कहा कि हेली टिकट बुकिंग से जुड़ी फर्जी वेबसाइट पर लगातार नजर रखी जा रही है। श्रद्धालुओं, पर्यटकों को इस ठगी से बचाने को ही आईआरसीटीसी से ही टिकट बुकिंग कराई जा रही है। पर्यटन सचिव सचिन कुर्वे ने बताया कि फर्जी वेबसाइट के जरिए ठग लोगों से ठगी कर रहे हैं। ठगी की इन शिकायतों को गंभीरता से लिया जा रहा है। ऐसी सभी फर्जी वेबसाइट पर एसटीएफ और साइबर सेल की लगातार नजर बनी हुई है। इन फर्जी वेबसाइट को बंद कराया जा रहा है। हेली सेवा की बुकिंग के नाम पर फर्जी वेबसाइट से हो रही ठगी को रोकने को आईआरसीटीसी को टिकट बुकिंग का जिम्मा दिया गया है। कहा कि चार धाम यात्रा में श्रद्धालुओं की संख्या लगातार एक नया रिकॉर्ड बना रही है। पंजीकरण का आंकड़ा 25 लाख को भी पार कर गया है। ऐसे में पर्यटन विभाग तीर्थयात्रियों को हर संभव सुविधा मुहैया कराने को मुस्तैदी से काम कर रहा है। सभी विभागीय अफसरों को साफ कर दिया गया है कि शासन से जारी दिशा निर्देशों का गंभीरता से पालन किया जाए।

विवेक शर्मा को सौंपा मुख्य राज्य सूचना आयुक्त का अस्थाई जिम्मा

देहरादून। सामान्य प्रशासन विभाग ने सोमवार को मुख्य राज्य सूचना आयुक्त के पद का अस्थाई जिम्मा राज्य सूचना आयुक्त विवेक शर्मा को देने का आदेश किया। सचिव सामान्य प्रशासन विभाग दीपेंद्र कुमार चौधरी की ओर से आदेश जारी किया गया। मुख्य राज्य सूचना आयुक्त अनिल चंद्र पुनेठा के रिटायर होने से ये पद खाली चल रहा है। नए मुख्य राज्य सूचना आयुक्त के चयन और शपथ होने तक अस्थाई व्यवस्था के तहत अब ये जिम्मेदारी राज्य सूचना आयुक्त विवेक शर्मा के पास रहेगी।

कर्मचारियों के ट्रांसफर पर नरमू ने किया प्रदर्शन

देहरादून। नरमू की देहरादून शाखा ने सोमवार को रेल प्रबंधक के दौरे के दौरान स्टेशन पर प्रदर्शन किया। पदाधिकारियों ने कहा कि मिड सेशन में अनुचित रूप से विभिन्न विभागों में कर्मचारियों के ट्रांसफर किए हैं। उन्होंने कहा कि अधिकारियों की मनमानी खत्म नहीं हुई तो आगे भी विरोध प्रदर्शन जारी रहेगा। इस दौरान शाखा सचिव नरेश गुरुंग, बीएस राजपूत, राकेश नौटियाल, आरएस राठी, गंगा चरण, नरेश कुमार, मेहरबान सिंह, वीरेंद्र नेगी, दीपक चौहान, दिलीप कुमार, रामसोच, अमित, कामिल, राजू, अमित थापा, मनीष, राहुल, नवीन जोशी, प्रदीप चौहान, राजेंद्र राणा आदि मौजूद थे।

रोटरी और यूनेस्को क्लब ने महिलाओं को नवाजा

देहरादून। अंतर्राष्ट्रीय मातृ दिवस के उपलक्ष्य में सोमवार को सौम्या काशी रोटरी क्लब एवं यूनेस्को क्लब विवेकानंद की ओर से विवेकानंद विद्यालय जोगीवाला में सम्मान समारोह आयोजित किया। उत्कृष्ट एवं प्रेरणादायक कार्य करने वाली सुमन रावत, रजनी गोसाई, दीपाली पासमोला, किरण तोमर को शॉल ओढ़ाकर एवं प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम संयोजक सुरेंद्र दत्त उनियाल ने कहा कि जननी की शक्ति संसार में सबसे महान है।

चारधाम यात्रा व्यवस्थाएं ठीक की जाएंः राजकुमार

देहरादून। कांग्रेस के पूर्व विधायक राजकुमार ने सोमवार को चारधाम यात्रा व्यवस्थाओं को लेकर मुख्य सचिव राधा रतूड़ी को ज्ञापन भेजा है। उन्होंने यात्रा मार्गों पर अव्यवस्थाओं पर नाराजगी जताई है। साथ ही रजिस्ट्रेशन में हो रही दिक्कतों को दुरुस्त करने की मांग की है। पूर्व विधायक राजकुमार ने कहा कि यात्रा मार्ग पर स्वास्थ्य सुविधाओं की भी बेहद कमी है।

संवेदनशील क्षेत्रों एवं स्लाइडिंग जोन में सुरक्षाबलों के साथ करें उचित प्रबंधन : जावलकर

जयन्त प्रतिनिधि। रूद्रप्रयाग : सचिव गृह दिलीप जावलकर ने श्री केदारनाथ धाम की यात्रा के सुगम एवं सुव्यवस्थित ढंग से संचालन के संबंध में सोमवार को जिला प्रशासन एवं पुलिस प्रशासन द्वारा की जा रही व्यवस्थाओं को लेकर जिलाधिकारी सौरभ गहरवार एवं पुलिस अधीक्षक विशाखा अशोक भदाणे के साथ तैयारियों की समीक्षा की।

जिला कार्यालय में आयोजित समीक्षा बैठक में सचिव गृह ने जिलाधिकारी को निर्देश दिए कि तीर्थ यात्रियों को सभी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध हों इसके लिए उचित प्रबंधन किए जाएं, ताकि तीर्थ यात्रियों को किसी भी प्रकार की कोई समस्या का सामना न करना पड़े। उन्होंने कहा कि केदारनाथ धाम में सभी तीर्थ यात्रियों को दर्शन की उचित व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। यात्रा मार्ग के संवेदनशील क्षेत्रों एवं स्लाइडिंग जोन में सुरक्षा बलों के साथ उचित प्रबंधन किया जाए ताकि तीर्थ यात्रियों को किसी असुविधा का सामना न करना पड़े। उन्होंने यातायात व्यवस्था को भी सुदृढ़ करने के निर्देश दिए। कहा कि यात्रियों की भारी संख्या के मद्देनजर सोनप्रयाग एवं गुप्तकाशी से पहले ही यात्रा को मैनेज किया जाए, ताकि यात्रा मार्ग में जाम जैसी स्थिति न होने पाए। सचिव गृह ने कहा कि श्री केदारनाथ धाम की यात्रा उत्तराखंड की मुख्य यात्रा है। कपाट खुलने के अवसर पर श्रद्धालुओं की संख्या बड़ी मात्रा में होती है। कपाट खुलने के अगले एक से दो सप्ताह में तथा सप्ताह के अंतिम दिनों में धाम पहुंचने वाले यात्रियों की संख्या में बहुत वृद्धि होती है। इस तरह से देखा जाए तो करीब 70-75 प्रतिशत यात्रा शुरूआती डेढ़ महीने में पूरी हो जाती है। इसी के दृष्टिगत प्रशासनिक स्तर पर अधिक तैयारियों की आवश्यकता होती है। इसके अलावा यात्रा की दृष्टि से विपरीत मौसम में शासन स्तर से अधिक ध्यान दिए जाने की आवश्यकता होती है। उन्होंने कहा कि अन्य सामान्य दिनों में सुचारू यात्रा हेतु जिला प्रशासन द्वारा बेहतर प्रबंधन किए गए हैं। उन्होंने कहा कि जनपद में कम्युनिकेशन को काफी अपडेट किया गया है। साथ ही अन्य व्यवस्थाओं में भी सुधार किया गया है। यात्रा के सफल संचालन हेतु जिला प्रशासन द्वारा अतिरिक्त पीआरडी की मांग पर शासन स्तर पर कार्यवाही की जानी है। उन्होंने केदारनाथ की यात्रा को वर्तमान में पूर्णतः सुरक्षित बताया। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी जीएस खाती, अपर जिलाधिकारी श्याम सिंह राणा, पुलिस उपाधीक्षक प्रबोध कुमार घिल्डियाल, उप जिलाधिकारी आशीष घिल्डियाल सहित संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

बरेली के अजय प्रताप ने यात्रा व्यवस्थाओं को बताया बेहतर

12 वर्षों से कर रहे बाबा केदारनाथ के दर्शन

जयन्त प्रतिनिधि। रूद्रप्रयाग : देश-विदेश के श्रद्धालुओं के लिए चारधाम यात्रा का शुभारंभ 10 मई से शुरू हो गया है। बरेली निवासी अजय प्रताप सिंह ने कहा कि वह श्री केदारनाथ धाम में 12 वर्षों से लगातार दर्शन करने आ रहे हैं। इस वर्ष केदारनाथ यात्रा मार्ग से लेकर केदारनाथ धाम तक बेहतर ढंग से व्यवस्थाएं की गई हैं तथा कई विकास कार्य जिला प्रशासन द्वारा किए गए हैं, जिसमें रोड का सौंदर्यीकरण के साथ-साथ अन्य सौंदर्यीकरण के कार्य किए गए हैं। उन्होंने अधिक से अधिक श्रद्धालुओं से बाबा केदारनाथ के दर्शन करने की अपील की है।केदारनाथ यात्रा व्यवस्थाओं के संबंध में जनपद रुद्रप्रयाग निवासी दिनेश उनियाल ने कहा कि वह बाबा केदारनाथ धाम के कपाट खुलने के अवसर पर केदारनाथ में मौजूद थे। उन्होंने कहा कि केदारनाथ धाम उच्च हिमालय क्षेत्र में अवस्थित है, यहां विषम कठिन परिस्थितियों के बावजूद जिला प्रशासन द्वारा यात्रा मार्ग से लेकर केदारनाथ धाम तक बेहतर ढंग से निर्माण कार्य इतने कम समय में किए गए हैं जो कि एक बहुत सराहनीय कार्य है तथा यात्रा विधिवत एवं बेहतर ढंग से सुचारू रूप से संचालित होगी। उन्होंने केदारनाथ धाम में दर्शन करने आने वाले तीर्थ यात्रियों से अपील की है कि केदारनाथ धाम उच्च हिमालयी क्षेत्र है, यहां मौसम पल-पल खराब होता रहता है तथा सभी यात्री अपनी पूर्ण तैयारी के साथ गरम कपड़ों को लेकर बाबा केदार के दर्शन करने आएं।

प्रधानाचार्य की भर्ती निरस्त न हुई तो जून से होगा आंदोलन

देहरादून। प्रधानाचार्य के पदों पर की जा रही भर्ती निरस्त करने और अन्य लंबित मांगों पर कार्यवाही को लेकर राजकीय शिक्षक संघ की राजीव गांधी नवोदय स्कूल में सोमवार को हुई बैठक में पांच जून के बाद राज्य स्तरीय आंदोलन का अल्टीमेटम दिया है। करीब तीन घंटे तक चली बैठक में शिक्षक पदाधिकारियों ने एकस्वर में कहा कि प्रधानाचार्य के रिक्त पद प्रमोशन के हैं जिन्हें सीधी भर्ती से भरा जा रहा है, यह शिक्षकों के साथ नाइंसाफी है। बैठक में पिछले साल अगस्त में शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत की अध्यक्षता में हुई बैठक के फैसलों पर कार्रवाई न होने पर नाराजगी जाहिर की गई।

कहा कि 33 में से चुनिंदा मुद्दों पर ही कार्यवाही कर विभाग ने आंखे मूंद ली। संघ के प्रदेश अध्यक्ष राम सिंह चौहान ने कहा कि पूर्व में शिक्षकों के आंदोलन के दौरान शिक्षा मंत्री और महानिदेशक द्वारा कई आश्वासन दिए गए थे। अब यदि संघ की मांगों पर चार जून तक ठोस कार्यवाही नहीं होती है तो फिर शिक्षक प्रदेश स्तर पर बड़ा आंदोलन शुरू कर देंगे।शिक्षा निदेशक बैठक में मनाने पहुंचेः शिक्षकों की नाराजगी की सूचना मिलने पर माध्यमिक शिक्षा निदेशक महावीर सिंह बिष्ट भी बैठक में पहुंचे। उन्होंने कहा कि शिक्षकों की मांगों पर कार्रवाई जारी है। निदेशालय स्तर पर करीब करीब सभी मुद्दों पर शासन को प्रस्ताव भेजे जा चुके हैं। शिक्षकों की शिक्षा मंत्री और महानिदेशक के साथ वार्ता भी कराने का प्रयास किया जा रहा है। रहे मौजूदः प्रदेश महामंत्री रमेश पैन्यूली, राजकुमार चौधरी, जगदीश बिष्ट, गोकुल मर्तोलिया, रविशंकर गुंसाई, श्याम सिंह सरियाल, महेंद्र पटवाल, विवेक पांडेय, आलोक रौथाण, रविंद्र रोड, चंडी नौटियाल, प्रकाश चौहान, दीपक गौड, राजकुमार, अरूण रमोला, प्रणय बहुगुणा आदि।

कितनी बार खुदेंगी देहरादून की सड़कें

देहरादून। उत्तराखंड क्रांति दल ने देहरादून महानगर की सड़कों की स्थिति पर चिंता जताई है। दल ने सरकार से पूछा कि आखिर देहरादून की सड़कों को निर्माण के नाम पर कितनी बार खोदा जाएगा।

दल की केंद्रीय मीडिया प्रभारी किरन रावत कश्यप ने कहा कि शहर में एक ओर सड़क बनाई जाती है वहीं, दूसरी ओर से उसे खोदना शुरू कर दिया जाता है।

शहर में चारों तरफ सड़कों पर गहरी सीवर लाइन का कार्य चल रहा है। ऐसे में लोगों को भीषण गर्मी में जाम का सामना करना पड़ रहा है। गड्ढों के कारण दुर्घटनाओं का खतरा तो रहता ही हैं, बरसात में इनमें पानी भरने से डेंगू का भी खतरा पैदा हो जाएगा। उन्होंने कि नगर निगम और स्मार्ट सिटी को इसका संज्ञान लेना चाहिए।

जिलाधिकारी कार्यालय में स्थापित हुआ ऑनलाइन ग्रिड सोलर पावर प्लांट

प्लांट के विद्युत उत्पादन से कार्यालय के बिजली के बिल में आएगी कमी

जयन्त प्रतिनिधि। चमोली : जिला कार्यालय में हरित ऊर्जा योजना के तहत 25 किलोवाट के ऑनलाइन ग्रिड सोलर पावर प्लांट की स्थापना कर दी गई है। प्लांट के लगने से जिलाधिकारी कार्यालय के बिजली के बिल में भारी कमी आ जाएगी। योजना का उद्देश्य राज्य में हरित ऊर्जा को बढ़ावा देते हुए राज्य पर बढ़ रहे ऊर्जा भार को कम करना है।

परियोजना अधिकारी उरेडा सौरभ कुमार ने बताया कि जिलाधिकारी कार्यालय में 25 किलोवाट क्षमता के ऑनलाइन ग्रिड सोलर पावर प्लांट की स्थापना की गई है। जिससे प्रतिमाह 3 हजार से 35 सौ यूनिट विद्युत का उत्पादन होगा। प्लांट से उत्पादित विद्युत ऊर्जा निगम को दिया जाएगा। जिसके बाद जिलाधिकारी कार्यालय में स्थापित प्लांट से उत्पादित विद्युत को कार्यालय में होने वाली खपत से कम कर विद्युत बिल तय किया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्लांट से उत्पादित होने वाली विद्युत से कार्यालय के बिजली बिल में 20 हजार रुपये के भार में कमी आ जाएगी। योजना से राज्य में हरित ऊर्जा के प्रसार के साथ ही ऊर्जा क्षेत्र में राज्य की निर्भरता अन्य माध्यम पर कम हो जाएगी।

यात्रा को सुव्यवस्थित ढंग से संचालित करने के लिए जिला प्रशासन प्रतिबद्ध

जयन्त प्रतिनिधि।

रूद्रप्रयाग : केदारनाथ धाम में दर्शन करने आने वाले तीर्थ यात्रियों की संख्या में निरंतर बढ़ोतरी हो रही है। दो दिन की यात्रा ने एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। जिसमे देश विदेश से आए 51,629 श्रद्धालुओं ने श्री केदारनाथ धाम के दर्शन कर लिए है। केदारनाथ धाम में दर्शन करने पहुंच रहे तीर्थ यात्रियों की सभी मूल भूत सुविधाएं उपलब्ध हो इसके लिए जिला प्रशासन सहित संबंधित विभाग निरंतर प्रयासरत है। केदारनाथ धाम स्वच्छ एवं साफ सुथरा वातावरण श्रद्धालुओं को उपलब्ध हो इसके दृष्टिगत नगर पंचायत केदारनाथ एवं सुलभ इंटरनेशनल के पर्यावरण मित्रों द्वारा निरंतर साफ सफाई व्यवस्था की जा रही है। अधिशासी अधिकारी नगर पंचायत केदारनाथ चंद्रशेखर चैधरी ने बताया कि धार्मिक स्थल में धूम्रपान कर वातावरण को दूषित करने वाले छः व्यक्तियों का चालान किया गया इसी के साथ दो दुकानदारों द्वारा गंदगी करने पर उनके चालान किए गए। सभी संबंधित व्यक्तियों से एक हजार रुपए का अर्थ दंड वसूला गया। चेतावनी दी गई कि यदि भविष्य में दोबारा धार्मिक स्थल पर धूम्रपान करने व गंदगी करते पकड़े जाने पर संबंधित के विरुद्ध नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही की जायेगी। केदारनाथ यात्रमार्ग में संचालित हो रहे घोड़े, खच्चरों का पशुपालन विभाग एवं टीम द्वारा निरंतर जांच की जा रही है कि किसी भी तरह से कोई भी घोड़ा, खच्चर यात्रा मार्ग में बिना लाइसेंस के संचालित न हो। इसके साथ ही घोड़े, खच्चरों के फिटनेस की भी जांच की जा रही है।

राज्य आंदोलनकारियों को निकाय चुनाव में मिले प्राथमिकता

देहरादून। उत्तराखंड राज्य आंदोलनकारी मंच के प्रदेश अध्यक्ष व प्रदेश महामन्त्री रामलाल खंडूड़ी ने शहीद स्मारक में हुई कोर बैठक में आगामी निकाय चुनावों के लिए सभी राजनैतिक दलों से राज्य आंदोलनकारी कार्यकर्ताओं को टिकट में प्राथमिकता देने की अपील की है। प्रवक्ता प्रदीप कुकरेती ने कहा कि उत्तराखंड राज्य आंदोलनकारी मंच पुरजोर तरीके से भाजपा, कांग्रेस, उक्रांद व अन्य क्षेत्रीय दलों में पृथक राज्य के लिये संघर्ष करने वाले लोगो को ही पार्षद, सभासद पद में टिकट देने का दबाव बना रही है। इस अपील में कहा गया है कि जो लोग राज्य की नीतियों को समझने, बनाने व समाज के क्षेत्र में कार्य करते हैं फिर चाहे वह किसी भी दल में हों उन्हें पार्षद से लेकर मेयर के दावेदारी में प्राथमिकता दें।

नाबालिग बहनों को सहस्रधारा के होटल में ले जाकर दुष्कर्म करने के दो आरोपी गिरफ्तार

देहरादून। नाबालिग बहनों को सहस्त्रधारा के होटल में ले जाकर दुष्कर्म करने के दो आरोपी पुलिस ने गिरफ्तार कर लिए। आरोपी युवक मोटर मैकेनिक का काम करते हैं। आरोपियों के खिलाफ राजपुर थाना पुलिस ने सोमवार को पोक्सो और दुष्कर्म की धाराओं में मुकदमा दर्ज किया। पूछताछ के बाद आरोपियों को कोर्ट में पेश किया। कोर्ट से दोनों आरोपियों को न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया गया।

एसओ राजपुर पीडी भट्ट ने बताया कि मूलरूप से चमोली जिला निवासी दो सगी बहनें देहरादून में रहती हैं। उनके माता–पिता की मौत हो चुकी है। इनमें छोटी बहन की उम्र करीब 14 वर्ष और बड़ी बहन की उम्र 16 वर्ष है। आरोप है कि 14 वर्षीय किशोरी से कुछ दिन पहले अहतसाम पुत्र महफूज उम्र 21 वर्ष निवासी आजादनगर कॉलोनी, निकट सहस्त्रधारा क्रासिंग ने बातचीत शुरू की। आरोपी ने पीड़िता को प्रेम का झांसा दिया। इसके बाद आरोपी ने 14 वर्षीय किशोरी की बड़ी बहन से अपने परिचित साहिल उम्र 26 हाल निवासी चूना भट्टा, मूल निवासी कांधला, जिला सहारनपुर का परिचय कराया। आरोप है कि उसने 16 वर्षीय किशोरी को प्रेम के झांसे में ले लिया। दोनों आरोपी मिले और दोनों पीड़िताओं को रविवार शाम सहस्त्रधारा घुमाने ले गए। आरोप है कि सहस्त्रधारा में होटल हेरिटेज में कमरा लिया और रात को वहां ठहरे। इस दौरान दोनों आरोपियों ने पीड़िताओं से दुष्कर्म किया। दोनों लड़कियां घर नहीं पहुंची तो पुलिस को सूचना दी गई।

पंडित भैरव दत्त धूलिया पुरस्कार इस वर्ष राजीव लोचन शाह को

देहरादून। इस साल का पंडित भैरव दत्त धूलिया पत्रकार पुरस्कार नैनीताल समाचार के संपादक राजीव लोचन शाह को दिया जाएगा। यह कार्यक्रम 19 मई को मयूर सिनेमा हॉल लैंसडाउन में होगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि इतिहासकार व पहाड़ के संपादक डॉ.शेखर पाठक के हाथों उन्हें यह सम्मान दिया जाएगा। कर्मभूमि फाउंडेशन द्वारा आयोजित दूसरे वर्ष का पुरस्कार समारोह में पत्रकारिता, साहित्य व सामाजिक क्षेत्र की अनेक हस्तियों के मौजूद रहने की संभावना है। राजीव लोचन शाह 1977 में स्थापित नैनीताल समाचार के माध्यम से पिछले 47 सालों से जनपक्षीय पत्रकारिता से जुड़े हुए हैं। उन्होंने चिपको(1977–82), नशा नहीं रोजगार दो(1984–85), उत्तराखंड राज्य स्थापना आंदोलन(1994–95) और राज्य स्थापित होने पर सभी सामाजिक विषयों समेत लगातार हर सामाजिक आंदोलन व संघर्षों में अग्रिम भूमिका निभाई है। कर्मभूमि फाउंडेशन के सचिव हिमांशु धूलिया ने बताया कि वर्ष 2023 से हर साल पंडित भैरव दत्त धूलिया पत्रकार पुरस्कार किसी एक पत्रकार को सार्वजनिक समारोह में देने का निर्णय लिया गया था।

वर्ष 2023 में जय सिंह रावत को यह सम्मान दिया गया। इस पुरस्कार में एक लाख रुपए की धनराशि, प्रशस्ति पत्र व शॉल भेंट किया जाता है। फाउंडेशन की एक मूल्यांकन कमेटी विजेता का नाम चुनती है। लैंसडाउन में होने वाले आयोजन में डॉ.एसपी नैथानी, अनिरुद्ध सुंदरियाल, प्रेस क्लब ऑफ इंडिया के पूर्व अध्यक्ष उमाकांत लखेड़ा, फाउंडेशन की अध्यक्ष सुमित्रा धूलिया, फिल्म निर्माता निर्देशक तिग्मांशु धूलिया भी मौजूद रहेंगे।

अग्रिम पत्रकार व स्वतंत्रता सेनानी थे भैरव दत्त

भैरव दत्त धूलिया उत्तराखंड के अग्रिम स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे। उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कई वर्ष जेल में रहे। 1938 में अपने साथियों संग मिलकर कर्मभूमि अखबार निकाला।

आईआईपी में जलवायु परिवर्तन को लेकर हुआ व्याख्यान

देहरादून।सीएसआरआई–आईआईपी मोहकमपुर में जलवायु परिवर्तन एवं स्वच्छता पखवाड़ा का संयुक्त कार्यक्रम संस्थान के डॉ. लवराज कुमार सभागार में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ आईआईपी निदेशक डॉ. हरेंद्र सिंह बिष्ट ने किया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. चेतन सिंह सोलंकी प्रोफेसर आईआईटी मुंबई तथा संस्थापक एनर्जी स्वराज फाउंडेशन ने जलवायु परिवर्तन और सुधारात्मक कार्यों संबन्धित 6 बिंदुओं की समझ विषय पर व्याख्यान दिया।

अवैध फड़, रेहड़ी, रिंग स्टैंड के खिलाफ 15 से व्यापारी चलाएंगे मुहिम

देहरादून। दून के मुख्य बाजार घंटाघर, पल्टन बाजार, डिस्पेसरी रोड स्थित हॉट बाजारों में अवैध रूप से लगने वाले फड़, रेहड़ी एवं रिंग स्टैण्ड लगने के कारण स्थानीय व्यापारियों के समक्ष आ रही समस्याओं को लेकर दून उद्योग व्यापार मंडल एवं भारतीय जनता पार्टी के प्रतिनिधि मंडल ने संयुक्त रूप से सिटी मजिस्ट्रेट प्रत्यूष सिंह, उप नगराधिकारी वीर सिंह बुदियाल, सीओ सिटी नीरज सेमवाल, शहर कोतवाल कैलाश भट्ट से मुलाकात की। व्यापारियों ने वार्ता के पश्चात तय किया कि 15 मई को सामूहिक रूप से बाजार में लग रहे हैं अवैध फड़, रेहड़ी, रिंग स्टैंड के खिलाफ सामूहिक मुहिम छेड़ी जाएगी और इन सबको बाजार से बाहर किया जाएगा प्रतिनिधि मण्डल में शामिल महानगर अध्यक्ष सिद्धार्थ अग्रवाल ने बताया कि भारी संख्या में दून एवं राज्य के बाहर के लोग बगैर सत्यापन के दुकानों के सामने फड़, रेहडी एवं रिंग स्टैंड के माध्यम से व्यापार कर रहे हैं। अन्य लोकल बाजारों में लग रहे इन हॉट बाजारों से स्थानीय व्यापारियों का कारोबार प्रभावित हो रहा है। इन बाजार में कार्य कर रहे लोगों का रवैया हमेशा लोकल दुकानदारों और ग्राहकों के खिलाफ रहता है। इनके कारण बहुत ज्यादा भीड़ होने से बाजारों में छोटे बच्चों, महिलाओं का निकलना मुश्किल हो गया है। भीड़ भरे बाजार में यदि किसी प्रकार की अनहोनी होती है, तो यह सब एकजुट होकर झगड़ने को तैयार हो जाते हैं।

डीएम ने जनमानस की समस्याएं सुनी, 96 शिकायतें प्राप्त

देहरादून। जिलाधिकारी सोनिका ने आज ऋषिपर्णा सभागार में जनपद स्तरीय अधिकारियों के साथ जनमानस की समस्याएं सुनी आज 96 शिकायतें प्राप्त हुई , जिन में भरण पोषण के मामले, उरेणा, आपदा राशि दिलवाने, आपसी विवाद, धोखा धड़ी, भूमि सीमांकन, प्रधानमंत्री आवास योजना से आवास दिलवाने, दीपनगर में पानी का दुरूपयोग, आशारोड़ी में भूमाफियों द्वारा सरकारी भूमि पर कब्जा किये जाने, किन्नरों द्वारा मनमाने ढंग से शगुन की राशि मांगे जाने आदि शिकायतें प्राप्त हुईं।जिलाधिकारी द्वारा संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि जनमानस की शिकायतों का त्वरित निस्तारण किया जाए उन्होंने उपजिलाधिकारियों को निर्देशित किया अपने–अपने क्षेत्रान्तर्गत प्राप्त भूमि संबंधी शिकायतों पर मौका मुआवना करते हुए नियामानुसार कार्यवाही करना सुनिश्चित करें। साथ ही भरण पोषण के प्रकरणों पर गंभीरता से कार्यवाही करें। जिलाधिकारी ने आशारोड़ी क्षेत्र में सरकारी भूमि पर अतिक्रमण की शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए नगर निगम के अधिकारियों एवं उपजिलाधिकारी सदर को कार्यवाही करने के निर्देश दिए। उन्होंने पानी की बर्बादी की शिकायतों पर जल संस्थान एवं पेयजल निगम के अधिकारियों को संबंधितों के विरूद्ध कार्यवाही करने के साथ ही पेयजल बर्बादी की शिकायतों पर निरंतर कार्यवाही करने के निर्देश दिए।इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी सुश्री झरना कमठान, अपर मुख्य नगर आयुक्त नगर निगम बीर सिंह बुदियाल, अपर जिलाधिकारी वित्त एवं रामजी शरण शर्मा, नगर मजिस्ट्रेट प्रत्युष सिंह, पुलिस अधीक्षक सुरेश कुमार , उपजिलाधिकारी सदर हरगिरी, उपजिलाधिकारी मुख्यालय शालिनी नेगी, जिला विकास अधिकारी सुनील कुमार, अधि0अभि0 विद्युत राकेश कुमार सहित एमडीडीए, पेयजल निगम, जल संस्थान, शिक्षा सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

वीकएंड पर ड्रिंक एंड ड्राइव में 42 वाहन चालक हुए गिरफ्तार

देहरादून। रात में नशे में धुत होकर वाहन चलाते हुए दूसरों के लिए खतरा बनने वाले वाहन चालकों के खिलाफ वीकएंड में सिटी क्षेत्र के थानों में अभियान चला। शनिवार और रविवार रात चले अभियान में 42 वाहन चालकों को नशे में धुत होकर कार चलाते हुए पकड़ा गया। इनके ड्राइविंग लाइसेंस निलंबन के लिए आरटीओ कार्यालय भेजे जा रहे हैं। एसएसपी अजय सिंह ने बताया कि बीते कुछ दिनों सामने आया कि वीकएंड पर रात के समय लोग नशे में धुत होकर सड़कों पर वाहन दौड़ाते हैं। उन्होंने शनिवार और रविवार रात नौ बजे से लेकर तड़के दो बजे तक एल्कोमीटर से अभियान चलाने का निर्देश सिटी के थाना प्रभारियों दिया। निर्देश पर शनिवार और रविवार रात शहर में अभियान चला। इस दौरान राजपुर और मसूरी रोड पर खास फोकस किया। एसपी सिटी प्रमोद कुमार ने बताया कि अभियान के तहत 42 वाहन चालकों को नशे में वाहन चलाते हुए पकड़ा गया। इनके खिलाफ 85 पुलिस एक्ट के तहत कार्रवाई की गई। इनके लाइसेंस निलंबन के लिए आरटीओ कार्यालय भेजे जा रहे हैं। एसओ राजपुर पीडी भट्ट ने बताया कि दो दिन के अभियान में राजपुर थाना पुलिस ने 10 वाहन चालकों के खिलाफ नशे में वाहन चलाने पर कार्रवाई की।

ऑनलाइन रिव्यू कर गंवाए 96,500

देहरादून। ऑनलाइन रिव्यू कर कमाई के झांसे में एक युवती ने 96,500 रुपए गंवा दिए। धोखाधड़ी को लेकर साक्षी की तहरीर पर क्लेमनटाउन थाना पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया है। कहा कि बीते 28 अप्रैल को व्हाट्सएप पर मैसेज आया। उसमें झांसा दिया गया कि उसके बताए अनुसार रेस्त्रां को गूगल पर रिव्यू किया तो घर बैठे कमाई की जा सकती है। पीड़िता झांसे में आ गई।

जयन्त

संस्थापक
नरेन्द्र उनियाल
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक और
सम्पादक
नागेन्द्र उनियाल
द्वारा जयन्त प्रकाशन डिग्री कॉलेज रोड़, जौनपुर कोटद्वार गढ़वाल (उत्तराखण्ड) से मुद्रित तथा जयन्त कार्यालय चन्द्रसिंह गढ़वाली मार्ग, गैरसैंण, जनपद चमोली उत्तराखण्ड से प्रकाशित
RNI No.UTTHIN/2005/16338